1 Corinthians

1 Greetings from Paul. I was chosen to be an apostle of Christ Jesus. God chose me because that is what he wanted. Greetings also from Sosthenes, our brother in Christ.

2 To God's church in Corinth, you who have been made holy because you belong to Christ Jesus. You were chosen to be God's holy people together with all people everywhere who trust in the Lord Jesus Christ—their Lord and ours.

3 Grace and peace to you from God our Father and the Lord Jesus Christ.

Paul Gives Thanks to God

4 I always thank my God for you because of the grace that he has given you through Christ Jesus. 5 In him you have been blessed in every way. You have been blessed in all your speaking and all your knowledge. 6 This proves that what we told you about Christ is true. 7 Now you have every gift from God while you wait for our Lord Jesus Christ to come again. 8 He will keep you strong until the end so that on the day when our Lord Jesus Christ comes, you will be free from all blame. 9 God is faithful. He is the one who has chosen you to share life with his Son, Jesus Christ our Lord.

Stop Arguing With Each Other

10 Brothers and sisters, by the authority of our Lord Jesus Christ, I beg all of you to agree with each other. You should not be divided into different groups. Be completely joined together again with the same kind of thinking and the same purpose.

11 My brothers and sisters, some members of Chloe's family told me that there are arguments among you. 12 This is what I mean: One of you says, "I follow Paul," and someone else says, "I follow Apollos." Another says, "I follow Peter," and someone else says, "I follow Christ." 13 Christ cannot be divided into different groups.

1 कुरिन्थियों

1 हमारे भाई सोस्थिनिस के साथ पौलुस की ओर से जिसे परमेश्वर ने अपनी इच्छानुसार यीशु मसीह का प्रेरित बनने के लिए चुना।

2 कुरिन्थुस में स्थित परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम; जो यीशु मसीह में पवित्र किये गये, जिन्हें परमेश्वर ने पवित्र लोग बनने के लिये उनके साथ ही चुना है। जो हर कहीं हमारे और उनके प्रभु यीशु मसीह का नाम पुकारते रहते है।

3 हमारे परम पिता की ओर से तथा हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम सब को उसकी अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

पौलुस का परमेश्वर को धन्यवाद

4 तुम्हें प्रभु यीशु में जो अनुग्रह प्रदान की गयी है, उसके लिये मैं तुम्हारी ओर से परमेश्वर का सदा धन्यवाद करता हूँ। 5 तुम्हारी यीशु मसीह में स्थिति के कारण तुम्हें हर किसी प्रकार से अर्थात समस्त वाणी और सम्पूर्ण ज्ञान से सम्पन्न किया गया है। 6 मसीह के विषय में हमने जो साक्षी दी है वह तुम्हारे बीच प्रमाणित हुई है। 7 और इसी के परिणामस्वरूप तुम्हारे पास उसके किसी पुरस्कार की कमी नहीं है। तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने की प्रतिक्षा करते रहते हो। 8 वह तुम्हें अन्त तक हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन एक दम निष्कलंक, खरा बनाये रखेगा। 9 परमेश्वर विश्वासपूर्ण है। उसी के द्वारा तुम्हें हमारे प्रभु और उसके पुत्र यीशु मसीह की सत् संगति के लिये चुना गया है।

कुरिन्थुस के कलीसिया की समस्याएँ

10 हे भाईयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में मेरी तुमसे प्रार्थना है कि तुम में कोई मतभेद न हो। तुम सब एक साथ जुटे रहो और तुम्हारा चिंतन और लक्ष्य एक ही हो।

11 मुझे खलोए के घराने के लोगों से पता चला है कि तुम्हारे बीच आपसी झगड़े है। 12 मैं यह कह रहा हूँ कि तुम में से कोई कहता है, "मैं पौलुस का हूँ" तो कोई कहता है, "मैं अपुल्लोस का हूँ।" किसी का मत है, "वह पतरस का है" तो कोई कहता है, "वह मसीह का है।" 13 क्या मसीह बँट गया है? पौलुस तो तुम्हारे लिये क्रूस पर नहीं चढ़ा

It wasn't Paul who died on the cross for you, was it? Were you baptized in Paul's name? 14 I am thankful that I did not baptize any of you except Crispus and Gaius. 15 I am thankful because now no one can say that you were baptized in my name. 16 (I also baptized the family of Stephanas, but I don't remember that I myself baptized any others.) 17 Christ did not give me the work of baptizing people. He gave me the work of telling the Good News. But he sent me to tell the Good News without using clever speech, which would take away the power that is in the cross of Christ.

God's Power and Wisdom in Christ

18 The teaching about the cross seems foolish to those who are lost. But to us who are being saved it is the power of God. 19 As the Scriptures say,

"I will destroy the wisdom of the wise.
I will confuse the understanding
of the intelligent." *Isaiah 29:14*

20 So what does this say about the philosopher, the law expert, or anyone in this world who is skilled in making clever arguments? God has made the wisdom of the world look foolish. 21 This is what God in his wisdom decided: Since the world did not find him through its own wisdom, he used the message that sounds foolish to save those who believe it.

22 The Jews ask for miraculous signs, and the Greeks want wisdom. 23 But this is the message we tell everyone: Christ was killed on a cross. This message is a problem for Jews, and to other people it is nonsense. 24 But Christ is God's power and wisdom to the people God has chosen, both Jews and Greeks. 25 Even the foolishness of God is wiser than human wisdom. Even the weakness of God is stronger than human strength.

26 Brothers and sisters, God chose you to be his. Think about that! Not many of you were wise in the way the world judges wisdom. Not many of you had great influence, and not

था। क्या वह चढ़ा था? तुम्हें पौलुस के नाम का बपतिस्मा तो नहीं दिया गया। बताओ क्या दिया गया था? 14परमेश्वर का धन्यवाद है कि मैंने तुममें से क्रिसपुस और गयुस को छोड़ कर किसी भी और को बपतिस्मा नहीं दिया। 15ताकि कोई भी यह न कह सके कि तुम लोगों को मेरे नाम का बपतिस्मा दिया गया है। 16(मैंने स्तिफनुस के परिवार को भी बपतिस्मा दिया था किन्तु जहाँ तक बाकी के लोगों की बात है, सो मुझे याद नहीं कि मैंने किसी भी और को कभी बपतिस्मा दिया हो।) 17क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए नहीं, बल्कि वाणी के किसी तर्क-वितर्क के बिना सुसमाचार का प्रचार करने के लिये भेजा था ताकि मसीह का क्रूस यूँ ही व्यर्थ न चला जाये।

परमेश्वर की शक्ति और ज्ञान-स्वरूप मसीह

18वे जो भटक रहे हैं, उनके लिए क्रूस का संदेश एक निरी मूर्खता है। किन्तु जो उद्धार पा रहे हैं उनके लिये वह परमेश्वर की शक्ति है। 19शास्त्रों में लिखा है:

"ज्ञानियों के ज्ञान को मैं नष्ट कर दूँगा;
और सारी चतुर की चतुरता
मैं कुंठित करूँगा।" *यशायाह 29:14*

20कहाँ है ज्ञानी व्यक्ति? कहाँ है विद्वान? और इस युग का शास्तार्थी कहाँ है? क्या परमेश्वर ने सांसारिक बुद्धिमानी को मूर्खता नहीं सिद्ध किया? 21इसलिए क्योंकि परमेश्वरीय ज्ञान के द्वारा यह संसार अपने बुद्धि बल से परमेश्वर को नहीं पहचान सका तो हम संदेश की तथाकथित मूर्खता का प्रचार करते हैं।

22यहूदी लोग तो चमत्कारपूर्ण संकेतों की माँग करते हैं और ग़ैर यहूदी विवेक की खोज में हैं। 23किन्तु हम तो बस क्रूस पर चढ़ाये गये मसीह का ही उपदेश देते हैं। एक ऐसा उपदेश जो यहूदियों के लिये विरोध का कारण है और ग़ैर यहूदियों के लिये निरी मूर्खता। 24किन्तु उनके लिये जिन्हें बुला लिया गया है, फिर चाहे वे यहूदी हैं या ग़ैर यहूदी, यह उपदेश मसीह है जो परमेश्वर की शक्ति है, और परमेश्वर का विवेक है। 25क्योंकि परमेश्वर की तथाकथित 'मूर्खता' मनुष्यों के ज्ञान से कहीं अधिक विवेकपूर्ण है। और परमेश्वर की तथाकथित 'दुर्बलता' मनुष्य की शक्ति से कहीं अधिक सक्षम है।

26हे भाईयों, अब तनिक सोचो कि जब परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया था तो तुममें से बहुतेरे न तो सांसारिक

many of you came from important families. [27] But God chose the foolish things of the world to shame the wise. He chose the weak things of the world to shame the strong. [28] And God chose what the world thinks is not important—what the world hates and thinks is nothing. He chose these to destroy what the world thinks is important. [29] God did this so that no one can stand before him and boast about anything. [30] It is God who has made you part of Christ Jesus. And Christ has become for us wisdom from God. He is the reason we are right with God and pure enough to be in his presence. Christ is the one who set us free from sin. [31] So, as the Scriptures say, "Whoever boasts should boast only about the Lord."*

My Message: Jesus Christ on the Cross

2 Dear brothers and sisters, when I came to you, I told you the secret truth of God. But I did not use fancy words or great wisdom. [2] I decided that while I was with you I would forget about everything except Jesus Christ and his death on the cross. [3] When I came to you, I was weak and shook with fear. [4] My teaching and my speaking were not with wise words that persuade people. But the proof of my teaching was the power that the Spirit gives. [5] I did this so that your faith would be in God's power, not in human wisdom.

God's Wisdom

[6] We teach wisdom to people who are mature, but the wisdom we teach is not from this world. It is not the wisdom of the rulers of this world, who are losing their power. [7] But we speak God's secret wisdom that has been hidden from everyone until now. God planned this wisdom for our glory. He planned it before the world began. [8] None of the rulers of this world understood this wisdom. If they had understood it, they would not have killed our great and glorious Lord on a cross. [9] But as the Scriptures say,

1:31 Quote from Jer. 9:24.

दृष्टि से बुद्धिमान थे और न ही शक्तिशाली। तुममें से उनेक का सामाजिक स्तर भी कोई ऊँचा नहीं था। [27]बल्कि परमेश्वर ने तो संसार में जो तथाकथित मूर्खतापूर्ण था, उसे चुना ताकि बुद्धिमान लोग लज्जित हों। परमेश्वर ने संसार में दुर्बलों को चुना ताकि जो शक्तिशाली है, वे लज्जित हों। [28]परमेश्वर ने संसार में उन्हें को चुना जो नीच थीं, जिनसे घृणा की जाती थी और जो कुछ भी नहीं है। परमेश्वर ने इन्हें चुना ताकि संसार जिसे कुछ समझता है, उसे वह नष्ट कर सके। [29]ताकि परमेश्वर के सामने कोई भी व्यक्ति अभीमान न कर पाये। [30]किन्तु तुम यीशू मसीह में उसी के कारण स्थित हो। वही परमेश्वर के वरदान के रूप में हमारी बुद्धि बन गया है। उसी के द्वारा हम निर्दोष ठहराये गये ताकि परमेश्वर को समर्पित हो सकें और हमें पापों से छुटकारे मिल पाये [31]जैसा कि शास्त्र में लिखा है: "यदि किसी को कोई गर्व करना है तो वह प्रभु में अपनी स्थिति का गर्व करे।"*

क्रूस पर चढ़े मसीह के विषय में संदेश

2 हे भाईयों, जब मैं तुम्हारे पास आया था तो परमेश्वर के रहस्यपूर्ण सत्य का, वाणी की चतुरता अथवा मानव बुद्धि के साथ उपदेश देते हुए नहीं आया था [2]क्योंकि मैंने यह निश्चय कर लिया था कि तुम्हारे बीच रहते, मैं यीशु मसीह और क्रूस पर हुई उसकी मृत्यु को छोड़ कर किसी और बात को जानूँगा तक नहीं। [3]सो मैं दीनता के साथ भय से पूरी तरह काँपता हुआ तुम्हारे पास आया। [4]और मेरी वाणी तथा मेरा संदेश मानव बुद्धि के लुभावने शब्दों से युक्त नहीं थे बल्कि उनमें था आत्मा की शक्ति का प्रमाण [5]ताकि तुम्हारा विश्वास मानव बुद्धि के बजाय परमेश्वर की शक्ति पर टिके।

परमेश्वर का ज्ञान

[6]जो समझदार हैं, उन्हें हम बुद्धि देते हैं किन्तु यह बुद्धि इस युग की बुद्धि नहीं है, न ही इस युग के उन शासकों की बुद्धि है जिन्हें विनाश के कगार पर लाया जा रहा है। [7]इसके स्थान पर हम तो परमेश्वर के उस रहस्यपूर्ण विवेक को देते हैं जो छिपा हुआ था और जिसे अनादि काल से परमेश्वर ने हमारी महिमा के लिये निश्चित किया था। [8]और जिसे इस युग के किसी भी शासक ने नहीं समझा क्योंकि यदि वे उसे समझ पाये होते तो वे उस महिमावान प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते। [9]किन्तु शास्त्र में लिखा है:

1:31 देखें यिर्म. 9:24

"No one has ever seen,
no one has ever heard,
no one has ever imagined
what God has prepared for those
who love him." *Isaiah 64:4*

10 But God has shown us these things through
the Spirit.

The Spirit knows all things. The Spirit even
knows the deep secrets of God. 11 It is like this:
No one knows the thoughts that another person
has. Only the person's spirit that lives inside
knows those thoughts. It is the same with God.
No one knows God's thoughts except God's Spirit.
12 We received the Spirit that is from God, not
the spirit of the world. We received God's Spirit
so that we can know all that God has given us.

13 When we say this, we don't use words
taught to us by human wisdom. We use words
taught to us by the Spirit. We use the Spirit's
words to explain spiritual truths. 14 People who
do not have God's Spirit do not accept the things
that come from his Spirit. They think these things
are foolish. They cannot understand them,
because they can only be understood with the
Spirit's help. 15 We who have the Spirit are able
to make judgments about all these things. But
anyone without the Spirit is not able to make
proper judgments about us. 16 As the Scriptures
say,

"Who can know what is on the Lord's mind?
Who is able to give him advice?"
Isaiah 40:13

But we have been given Christ's way of thinking.

Teachers Are Only God's Servants

3 Brothers and sisters, when I was there, I
could not talk to you the way I talk to people
who are led by the Spirit. I had to talk to you like
ordinary people of the world. You were like
babies in Christ. 2 And the teaching I gave you
was like milk, not solid food. I did this because
you were not ready for solid food. And even now

"जिन्हें आँखों ने देखा नहीं
और कानों ने सुना नहीं;
जहाँ मनुष्य की बुद्धि तक
कभी नहीं पहुँची ऐसी बातें
उनके हेतु प्रभु ने बनायी जो
जन उसके प्रेमी होते।" *यशायाह 64:4*

10 किन्तु परमेश्वर ने उन ही बातों को आत्मा के
द्वारा हमारे लिये प्रकट किया है।

आत्मा हर किसी बात को ढूँढ निकालती है यहाँ
तक कि परमेश्वर की छिपी गहराइयों तक को। 11 ऐसा
कौन है जो दूसरे मनुष्य के मन की बातें जान ले
सिवाय उस व्यक्ति के उस आत्मा के जो उसके अपने
भीतर ही है। इसी प्रकार परमेश्वर के विचारों को भी
परमेश्वर की आत्मा को छोड़ कर और कौन जान
सकता है। 12 किन्तु हममें तो सांसारिक आत्मा नहीं
बल्कि वह आत्मा पायी है जो परमेश्वर से मिलती है
ताकि हम उन बातों को जान सकें जिन्हें परमेश्वर ने
हमें मुक्त रूप से दिया है।

13 उन ही बातों को हम मानवबुद्धि द्वारा विचारे
गये शब्दों में नहीं बोलते बल्कि आत्मा द्वारा विचारे
गये शब्दों से आत्मा की वस्तुओं की व्याख्या करते
हुए बोलते हैं। 14 एक प्राकृतिक व्यक्ति परमेश्वर
की आत्मा द्वारा प्रकाशित सत्य को ग्रहण नहीं
करता क्योंकि उसके लिए वे बातें निरी मूर्खता
होती हैं, वह उन्हें समझ नहीं पाता क्योंकि वे
आत्मा के आधार पर ही परखी जा सकती हैं।
15 आध्यात्मिक मनुष्य सब बातों का न्याय कर
सकता है किन्तु उसका न्याय कोई नहीं कर सकता।
16 क्योंकि शास्त्र कहता है:

"प्रभु के मन को किसने जाना?
उसको कौन सिखाए?"
यशायाह 40:13

किन्तु हमारे पास यीशु का मन है।

मनुष्यों का अनुसरण उचित नहीं

3 किन्तु हे भाईयों, मैं तुम लोगों से वैसे बात
नहीं कर सका जैसे आध्यात्मिक लोगों से
करता हूँ। मुझे इसके विपरीत तुम लोगों से वैसे
बात करनी पड़ी जैसे सांसारिक लोगों से की जाती
है। यानी उनसे जो अभी मसीह में बच्चे हैं। 2 मैंने तुम्हें
पीने को दूध दिया, ठोस आहार नहीं; क्योंकि तुम अभी
उसे खा नहीं सकते थे और न ही तुम इसे आज भी खा

you are not ready. 3 You are still not following the Spirit. You are jealous of each other, and you are always arguing with each other. This shows that you are still following your own selfish desires. You are acting like ordinary people of the world. 4 One of you says, "I follow Paul," and someone else says, "I follow Apollos." When you say things like that, you are acting like people of the world.

5 Is Apollos so important? Is Paul so important? We are only servants of God who helped you believe. Each one of us did the work God gave us to do. 6 I planted the seed and Apollos watered it. But God is the one who made the seed grow. 7 So the one who plants is not important, and the one who waters is not important. Only God is important, because he is the one who makes things grow. 8 The one who plants and the one who waters have the same purpose. And each one will be rewarded for his own work. 9 We are workers together for God, and you are like a farm that belongs to God.

And you are a house that belongs to God. 10 Like an expert builder I built the foundation of that house. I used the gift that God gave me to do this. Other people are building on that foundation. But everyone should be careful how they build. 11 The foundation that has already been built is Jesus Christ, and no one can build any other foundation. 12 People can build on that foundation using gold, silver, jewels, wood, grass, or straw. 13 But the work that each person does will be clearly seen, because the Day* will make it plain. That Day will appear with fire, and the fire will test everyone's work. 14 If the building they put on the foundation still stands, they will get their reward. 15 But if their building is burned up, they will suffer loss. They will be saved, but it will be like someone escaping from a fire.

सकते हो 3क्योंकि तुम अभी तक सांसारिक हो। क्या तुम सांसारिक नहीं हो? जबकि तुममें आपसी ईर्ष्या और कलह मौजूद है। और तुम सांसारिक व्यक्तियों जैसा व्यवहार करते हो। 4जब तुममें से कोई कहता है, "मैं पौलुस का हूँ" और दूसरा कहता है, "मैं अपुल्लोस का हूँ" तो क्या तुम सांसारिक मनुष्यों का सा आचरण नहीं करते?

5अच्छा तो बताओ अपुल्लोस क्या है और पौलुस क्या है? हम तो केवल वे सेवक हैं जिनके द्वारा तुमने विश्वास को ग्रहण किया है। हममें से हर एक ने बस वह काम किया है जो प्रभु ने हमें सौंपा था। 6मैंने बीज बोया, अपुल्लोस ने उसे सींचा; किन्तु उसकी बढ़वार तो परमेश्वर ने ही की। 7इस प्रकार न तो वह जिसने बोया, बड़ा है, और न ही वह जिसने उसे सींचा। बल्कि बड़ा तो परमेश्वर है जिसने उसकी बढ़वार की। 8वह जो बोता है और वह जो सींचता है, दोनों का प्रयोजन समान है। सो हर एक अपने कर्मो के परिणामों के अनुसार ही प्रतिफल पायेगा। 9परमेश्वर की सेवा में हम सब सहकर्मी हैं। तुम परमेश्वर के खेत हो।

परमेश्वर के मन्दिर हो। 10परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया था, मैंने एक कुशल प्रमुख शिल्पी के रूप में नींव डाली किन्तु उस पर निर्माण तो कोई और ही करता है; किन्तु हर एक को सावधानी के साथ ध्यान रखना चाहिये कि वह उस पर निर्माण कैसे कर रहा है। 11क्योंकि जो नींव डाली गई है वह स्वयं यीशु मसीह ही है और उससे भिन्न दूसरी नींव कोई डाल ही नहीं सकता। 12यदि लोग उस नींव पर निर्माण करते हैं, फिर चाहे वे उसमें सोना लगायें, चाँदि लगायें, बहुमूल्य रत्न लगायें, लकड़ी लगायें, फूस लगायें या तिनकों क प्रयोग करें। 13हर व्यक्ति का कर्म स्पष्ट रूप से दिखाई देगा। क्योंकि वह दिन* उसे उजागर कर देगा। क्योंकि वह दिन ज्वाला के साथ प्रकट होगा और वही ज्वाला हर व्यक्ति के कर्मो को परखेगी कि वे कर्म कैसे हैं। 14यदि उस नींव पर किसी व्यक्ति के कर्मों की रचना टिकाऊ होगी 15तो वह उसका प्रतिफल पायेगा और यदि किसी का कर्म उस ज्वाला में भस्म हो जायेगा तो उसे हानि उठानी होगी। किन्तु फिर भी वह स्वयं वैसे ही बच निकलेगा जैसे कोई आग लगे भवन में से भाग कर बच निकले।

16क्या तुम नहीं जानते कि तुम लोग स्वयं

Day The day Christ will come to judge everyone and take his people to live with him.

वह दिन वह दिन जब यीशु सभी लोगों का न्याय करने के लिए आएगा।

16 You should know that you yourselves are
God's temple. God's Spirit lives in you. 17 If you
destroy God's temple, God will destroy you,
because God's temple is holy. You yourselves are
God's temple.

18 Don't fool yourselves. Whoever thinks they
are wise in this world should become a fool.
That's the only way they can be wise. 19 I say
this because the wisdom of this world is
foolishness to God. As the Scriptures say, "He
catches those who think they are wise in their
own clever traps." 20 The Scriptures also say,
"The Lord knows the thoughts of the wise. He
knows that their thoughts are worth nothing."
21 So there is not a person on earth that any of
you should be boasting about. Everything is yours:
22 Paul, Apollos, Peter, the world, life, death,
the present, and the future—all these are yours.
23 And you belong to Christ, and Christ belongs
to God.

Apostles of Christ

4 You should think of us as servants of Christ,
the ones God has trusted to do the work of
making known his secret truths. 2 Those who are
trusted with such an important work must show
that they are worthy of that trust. 3 But I don't
consider your judgment on this point to be worth
anything. Even an opinion from a court of law
would mean nothing. I don't even trust my own
judgment. 4 I don't know of any wrong I have
done, but that does not make me right. The Lord is
the one who must decide if I have done well or
not. 5 So don't judge anyone now. The time for
judging will be when the Lord comes. He will
shine light on everything that is now hidden in
darkness. He will make known the secret purposes
of our hearts. Then the praise each person should
get will come from God.

6 Brothers and sisters, I have used Apollos
and myself as examples for you. I did this so
that you could learn from us the meaning of
the words, "Follow what the Scriptures say."
Then you will not brag about one person and
criticize another. 7 Who do you think you

परमेश्वर का मंदिर हो और परमेश्वर की आत्मा
तुममें निवास करती है? 17यदि कोई परमेश्वर के
मन्दिर को हानि पहुँचाता है तो परमेश्वर उसे नष्ट
कर देगा। क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर तो पवित्र
है। हाँ, तुम ही तो वह मन्दिर हो।

18अपने आपको मत छलो। यदि तुममें से कोई
यह सोचता है कि इस युग के अनुसार वह बुद्धिमान
है तो उसे बस तथाकथित मूर्ख ही बने रहना
चाहिये ताकि वह सचमुच बुद्धिमान बन जाये;
19क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में सांसारिक चतुरता
मूर्खता है। शास्त्र कहता है, "परमेश्वर बुद्धिमानों
को उनकी ही चतुरता में फँसा देता।" 20और
फिर, "प्रभु जानता है बुद्धिमानों के विचार सब
व्यर्थ हैं।" 21इसलिए मनुष्यों पर किसी को भी गर्व
नहीं करना चाहिये क्योंकि यह सब कुछ तुम्हारा
ही तो है। 22फिर चाहे वह पौलुस हो, अपुल्लोस
हो या पतरस चाहे संसार हो, जीवन हो या मृत्यु
हो, चाहे ये आज की बातें हों या आने वाले कल
की। सभी कुछ तुमहारा ही तो है। 23और तुम
मसीह के हो और मसीह परमेश्वर का।

मसीह के संदेशवाहक

4 हमारे बारे में किसी व्यक्ति को इस प्रकार
सोचना चाहिये कि हम लोग मसीह के सेवक
हैं। परमेश्वर ने हमें और रहस्यपूर्ण सत्य सौंपे हैं।
2और फिर जिन्हें ये रहस्य सौंपे हैं, उन पर यह
दायित्व भी है कि वे विश्वास योग्य हों। 3मुझे
इसकी तनिक भी चिंता नहीं है कि तुम लोग मेरा
न्याय करो या मनुष्यों की कोई और अदालत। मैं
स्वयं भी अपना न्याय नहीं करता। 4क्योंकि मेरा
मन स्वच्छ है। किन्तु इसी कारण मैं छूट नहीं
जाता। प्रभु तो एक ही है जो न्याय करता है।
5इसलिए ठीक समय आने से पहले अर्थात् जब
तक प्रभु न आ जाये, तब तक किसी भी बात का
न्याय मत करो। वही अन्धेरे में छिपी बातों को
उजागर करेगा और मन की प्रेरणा को प्रकट करेगा।
उस समय परमेश्वर की ओर से हर किसी की
उपयुक्त प्रशंसा होगी।

6हे भाईयों, मैंने इन बातों को अपुल्लोस पर और
स्वयं अपने पर तुम लोगों के लिये ही चरितार्थ किया है
ताकि तुम हमारा उदाहरण देखते हुए उन बातों को न
उलाँघ जाओ जो शास्त्र में लिखी हैं। ताकि एक व्यक्ति
का पक्ष लेते हुए और दुसरे का विरोध करते हुए
अहंकार में न भर जाओ। 7कौन कहता है कि तू किसी
दूसरे से अधिक अच्छा है। तेरे पास अपना ऐसा क्या

are? Everything you have was given to you. So, if everything you have was given to you, why do you act as if you got it all by your own power?

[8] You think you have everything you need. You think you are rich. You think you have become kings without us. I wish you really were kings. Then we could rule together with you. [9] But it seems to me that God has given me and the other apostles the last place. We are like prisoners condemned to die, led in a parade for the whole world to see—not just people but angels too. [10] We are fools for Christ, but you think you are so wise in Christ. We are weak, but you think you are so strong. People give you honor, but they don't honor us. [11] Even now we still don't have enough to eat or drink, and we don't have enough clothes. We often get beatings. We have no homes. [12] We work hard with our own hands to feed ourselves. When people insult us, we ask God to bless them. When people treat us badly, we accept it. [13] When people say bad things about us, we try to say something that will help them. But people still treat us like the world's garbage—everyone's trash.

[14] I am not trying to make you feel ashamed, but I am writing this to counsel you as my own dear children. [15] You may have ten thousand teachers in Christ, but you don't have many fathers. Through the Good News I became your father in Christ Jesus. [16] So I beg you to be like me. [17] That is why I am sending Timothy to you. He is my son in the Lord. I love him and trust him. He will help you remember the way I live in Christ Jesus—a way of life that I teach in every meeting of the church wherever I am.

[18] Some of you are acting so proud, it seems as though you think I won't be coming there again. [19] But I will come to you very soon, the Lord willing. Then I will see if these proud talkers have the power to do anything more than talk. [20] God's kingdom is not seen in talk but in power. [21] Which do you want: that I come to you with punishment, or that I come with love and gentleness?

है? जो तुझे दिया नहीं गया है? और जब तुझे सब कुछ किसी के द्वारा दिया गया है तो फिर इस रूप में अभिमान किस बात का कि जैसे तूने किसी से कुछ पाया ही न हो।

[8]तुम लोग सोचते हो कि जिस किसी वस्तु की तुम्हें आवश्यकता थी, अब वह सब कुछ तुम्हारे पास है। तुम सोचते हो अब तुम सम्पन्न हो गए हो। तुम हमारे बिना ही राजा बन बैठे हो। कितना अच्छा होता कि तुम सचमुच राजा होते ताकि तुम्हारे साथ हम भी राज्य करते। [9]क्योंकि मेरा विचार है कि परमेश्वर ने हम प्रेरितों को कर्म-क्षेत्र में उन लोगों के समान सबसे अंत में स्थान दिया है जिन्हें मृत्यु-दण्ड दिया जा चुका है। क्योंकि हम समूचे संसार, स्वर्गदूतों और लोगों के सामने तमाशा बने हैं। [10]हम मसीह के लिये मूर्ख बने हैं किन्तु तुम लोग मसीह में बहुत बुद्धिमान हो। हम दुर्बल हैं किन्तु तुम तो बहुत सबल हो। तुम सम्मानित हो और हम अपमानित। [11]इस घड़ी तक हम तो भूखे-प्यासे हैं। फटे-पुराने चिथड़े पहने हैं। हमारे साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। हम बेघर हैं। [12]अपने हाथों से काम करते हुए हम मेहनत मज़दूरी करते हैं। [13]गाली खा कर भी हम आशीर्वाद देते हैं। सताये जाने पर हम उसे सहते हैं। जब हमारी बदनामी हो जाती है, हम तब भी मीठा बोलते हैं। हम अभी भी जैसे इस दुनिया का मल-फेन और कूड़ा कचरा बने हुए हैं।

[14]तुम्हें लज्जित करने के लिये मैं यह नहीं लिख रहा हूँ। बल्कि अपने प्रिय बच्चों के रूप में तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ। [15]क्योंकि चाहे तुम्हारे पास मसीह में तुम्हारे दसियों हजार संरक्षक मौजूद हैं, किन्तु तुम्हारे पिता तो अनेक नहीं हैं। क्योंकि सुसमाचार द्वारा मसीह यीशु में मैं तुम्हारा पिता बना हूँ। [16]इसलिए तुमसे मेरा आग्रह है, मेरा अनुकरण करो। [17]मैंने इसीलिए तिमुथियुस को तुम्हारे पास भेजा है। वह प्रभु में स्थित मेरा प्रिय एवम् विश्वास करने योग्य पुत्र है। यीशु मसीह में मेरे आचरणों की वह तुम्हें याद दिलायेगा। जिनका मैंने हर कहीं, हर कलीसिया में उपदेश दिया है।

[18]कुछ लोग अंधकार में इस प्रकार फूल उठे हैं जैसे अब मुझे तुम्हारे पास कभी आना ही न हो। [19]अस्तु यदि परमेश्वर ने चाहा तो शीघ्र ही मैं तुम्हारे पास आऊँगा और फिर अहंकार में फूले उन लोगों की मात्र वाचालता को नहीं बल्कि उनकी शक्ति को देख लूँगा। [20]क्योंकि परमेश्वर का राज्य वाचालता पर नहीं, शक्ति पर टिका है। [21]तुम क्या चाहते हो: हाथ में छड़ी थामे मैं तुम्हारे पास आऊँ या कि प्रेम और कोमल आत्मा साथ में लाऊँ?

कलीसिया में दुराचार

Don't Let Your People Live in Sin

5 I don't want to believe what I am hearing—
that there is sexual sin among you. And it is
such a bad kind of sexual sin that even those who
have never known God don't allow it. People
say that a man there has his father's wife. 2 And
still you are proud of yourselves! You should have
been filled with sadness. And the man who
committed that sin should be put out of your
group. 3 I cannot be there with you in person,
but I am with you in spirit. And I have already
judged the man who did this. I judged him the
same as I would if I were really there. 4 Come
together in the name of our Lord Jesus. I will be
with you in spirit, and you will have the power
of our Lord Jesus with you. 5 Then turn this man
over to Satan. His sinful self has to be destroyed
so that his spirit will be saved on the day when
the Lord comes again.

6 Your proud talk is not good. You know the
saying, "Just a little yeast makes the whole
batch of dough rise." 7 Take out all the old yeast,
so that you will be a new batch of dough. You
really are bread without yeast—Passover bread.
Yes, Christ our Passover Lamb has already been
killed. 8 So let us eat our Passover meal, but not
with the bread that has the old yeast, the yeast of
sin and wrongdoing. But let us eat the bread that
has no yeast. This is the bread of goodness and
truth.

9 I wrote to you in my letter that you should
not associate with people who sin sexually. 10 But
I did not mean the people of this world. You
would have to leave the world to get away from
all the people who sin sexually, or who are
greedy and cheat each other, or who worship
idols. 11 I meant you must not associate with
people who claim to be believers but continue to
live in sin. Don't even eat with a brother or
sister who sins sexually, is greedy, worships
idols, abuses others with insults, gets drunk, or
cheats people.

12-13 It is not my business to judge those who
are not part of the group of believers. God will
judge them, but you must judge those who are

5 सचमुच ऐसा बताया गया है कि तुम लोगों में
दुराचार फैला हुआ है। ऐसा दुराचार-व्यभिचार
तो अधर्मियों तक में नहीं मिलता। जैसे कोई तो
अपनी विमाता तक के साथ सहवास करता है।
2और फिर तुम लोग अभिमान में फूले हुए हो।
किन्तु क्या तुम्हें इसके लिये दुखी नहीं होना चाहिये?
जो कोई ऐसा दुराचार करता है उसे तो तुम्हें अपने
बीच से निकाल बाहर करना चाहिये था। 3मैं
यद्यपि शारीरिक रूप से तुम्हारे बीच नहीं हूँ किन्तु
आत्मिक रूप से तो वहीं उपस्थित हूँ। और मानो
वहाँ उपस्थित रहते हुए जिसने ऐसे बुरे काम किये
हैं, उसके विरुद्ध मैं अपना यह निर्णय दे चुका हूँ
4कि जब तुम मेरे साथ हमारे प्रभु यीशु के नाम में
मेरी आत्मा और हमारे प्रभु यीशु की शक्ति के साथ
एकत्रित होओगे 5तो ऐसे व्यक्ति को उसके पापपूर्ण
मानव स्वभाव को नष्ट कर डालने के लिये शैतान
को सौंप दिया जायेगा ताकि प्रभु के दिन उसकी
आत्मा का उद्धार हो सके।

6तुम्हारा यह बड़बोलापन अच्छा नहीं है। तुम
इस कहावत को तो जानते ही हो, "थोड़ा सा ख़मीर
आटे के पूरे लौंदे को खमीरमय कर देता है।"
7पुराने ख़मीर से छुटकारा पाओ ताकि तुम आटे
का नया लौंदा बन सको। तुम तो बिना ख़मीर
वाली फ़सह की रोटी के समान हो। हमें पवित्र
करने के लिये मसीह को फ़सह के मेमने के रूप
में बलि चढ़ा दिया गया। 8इसलिए आओ हम
अपना फ़सह पर्व बुराई और दुष्टता से युक्त पुराने
ख़मीर की रोटी से नहीं बल्कि निष्ठा और सत्य से
युक्त बिना ख़मीर की रोटी से मनायें।

9अपने पिछले पत्र में मैंने लिखा था कि तुम्हें उन
लोगों से अपना नाता नहीं रखना चाहिए जो व्यभिचारी
हैं। 10मेरा यह प्रयोजन बिलकुल नहीं था कि तुम इस
दुनिया के व्यभिचारियों, लोभियों, ठगों या मूर्ति-पूजकों
से कोई सम्बन्ध ही मत रखो। ऐसा होने पर तो तुम्हें
इस संसार से ही निकल जाना होगा। 11किन्तु मैंने
तुम्हें जो लिखा है, वह यह है कि किसी ऐसे व्यक्ति से
नाता मत रखो जो अपने आपको मसीही बन्धु कहला
कर भी व्यभिचारी, लोभी, मूर्तिपूजक चुगलखोर,
पियक्कड़ या एक ठग है। ऐसे व्यक्ति के साथ तो
भोजन भी ग्रहण मत करो।

12जो लोग बाहर के हैं, कलीसिया के नहीं, उनका
न्याय करने का भला मेरा क्या काम। क्या तुम्हें उन ही
का न्याय नहीं करना चाहिये जो कलीसिया के भीतर
के हैं? 13कलीसिया के बाहर वालों का न्याय तो
परमेश्वर करेगा। शास्त्र कहता है: "तुम पाप को अपने

part of your group. The Scriptures say, "Make the evil person leave your group."*

Judging Problems Between Believers

6 When one of you has something against someone else in your group, why do you go to the judges in the law courts? The way they think and live is wrong. So why do you let them decide who is right? Why don't you let God's holy people decide who is right? 2 Don't you know that God's people will judge the world? So if you will judge the world, then surely you can judge small arguments like this. 3 You know that in the future we will judge angels. So surely we can judge life's ordinary problems. 4 So if you have such matters to be judged, why do you take them to those who are not part of the church? They mean nothing to you. 5 I say this to shame you. Surely there is someone in your group wise enough to judge a complaint between two believers. 6 But now one believer goes to court against another, and you let people who are not believers judge their case!

7 The lawsuits that you have against each other show that you are already defeated. It would be better for you to let someone wrong you. It would be better to let someone cheat you. 8 But you are the ones doing wrong and cheating. And you do this to your own brothers and sisters in Christ!

9-10 Surely you know that people who do wrong will not get to enjoy God's kingdom. Don't be fooled. These are the people who will not get to enjoy his kingdom: those who sin sexually, those who worship idols, those who commit adultery, men who let other men use them for sex or who have sex with other men, those who steal, those who are greedy, those who drink too much, those who abuse others with insults, and those who cheat. 11 In the past some of you were like that. But you were washed clean, you were made holy, and you were made right with God in the name of the Lord Jesus Christ and by the Spirit of our God.

बीच से बाहर निकाल दो।"*

आपसी विवादों का निबटारा

6 क्या तुममें से कोई ऐसा है जो अपने साथी के साथ कोई झगड़ा होने पर परमेश्वर के पवित्र पुरुषों के पास न जा कर अधर्मी लोगों की अदालत में जाने का साहस करता हो? 2अथवा क्या तुम नहीं जानते कि परमेश्वर के पवित्र पुरुष ही जगत का न्याय करेंगे? और जब तुम्हारे द्वारा सारे संसार का न्याय किया जाना है तो क्या अपनी इन छोटी-छोटी बातों का न्याय करने योग्य तुम नहीं हो? 3क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का भी न्याय करेंगे? फिर इस जीवन की इन रोज़मर्रा की छोटी मोटी बातों का तो कहना ही क्या। 4यदि हर दिन तुम्हारे बीच कोई न कोई विवाद रहता ही है तो क्या न्यायाधीश के रूप में तुम ऐसे व्यक्तियों की नियुक्ति करोगे जिनका कलीसिया में कोई स्थान नहीं है। 5यह मैं तुमसे इसलिए कह रहा हूँ कि तुम्हें कुछ लाज आये। क्या स्थिति इतनी बिगड़ चुकी है कि तुम्हारे बीच कोई ऐसा बुद्धिमान पुरूष है ही नहीं जो अपने मसीही भाइयों के आपसी झगड़े सुलझा सके? 6क्या एक भाई कभी अपने दूसरे भाई से मुकदमा लड़ता है! और तुम तो अविश्वासियों के सामने ऐसा कर रहे हो।

7वास्तव में तुम्हारी पराजय तो इसी में हो चुकी कि तुम्हारे बीच आपस में कानूनी मुकदमे हैं। इसके स्थान पर तुम आपस में अन्याय ही क्यों नहीं सह लेते? अपने आपको क्यों नहीं लुट जाने देते। 8तुम तो स्वयं अन्याय करते हो और अपने ही मसीही भाईयों को लूटते हो!

9अथवा क्या तुम नहीं जानते कि बुरे लोग परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकार नहीं पायेंगे? अपने आप को मूर्ख मत बनाओ। यौनाचार करने वाले, मूर्ति पूजक, व्यभिचारी, गुदा-भंजन कराने वाले, लौंडेबाज़, 10लुटेरे, लालची, पियक्कड़, चुगलखोर और ठग परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी नहीं होंगे। 11तुममें से कुछ ऐसे ही थे। किन्तु अब तुम्हें धोया गया और पवित्र कर दिया है। तुम्हें परमेश्वर की सेवा में अर्पित कर दिया गया है। प्रभु यीशु मसीह के नाम और हमारे परमेश्वर के आत्मा के द्वारा उन्हें धर्मी करार दिया जा चुका है।

अपने शरीर को परमेश्वर की महिमा में लगाओ

5:12-13 Quote from Deut. 22:21, 24.

5:12-13 देखें व्यवस्था. 22:21, 24

Use Your Bodies for God's Glory

12 "I am allowed to do anything," you say.
My answer to this is that not all things are
good. Even if it is true that "I am allowed to do
anything," I will not let anything control me
like a slave. 13 Someone else says, "Food is
for the stomach, and the stomach for food."
Yes, and God will destroy them both. But the
body is not for sexual sin. The body is for the
Lord, and the Lord is for the body. 14 And God
will raise our bodies from death with the
same power he used to raise the Lord Jesus.
15 Surely you know that your bodies are parts of
Christ himself. So I must never take what is part
of Christ and join it to a prostitute! 16 The
Scriptures say, "The two people will become
one."* So you should know that anyone who is
joined with a prostitute becomes one with her in
body. 17 But anyone who is joined with the Lord
is one with him in spirit.

18 So run away from sexual sin. It involves
the body in a way that no other sin does. So if
you commit sexual sin, you are sinning against
your own body. 19 You should know that your
body is a temple for the Holy Spirit that you
received from God and that lives in you. You
don't own yourselves. 20 God paid a very high
price to make you his. So honor God with your
body.

About Marriage

7 Now I will discuss the things you wrote me
about. You asked if it is better for a man not to
have any sexual relations at all. 2 But sexual sin
is a danger, so each man should enjoy his own
wife, and each woman should enjoy her own
husband. 3 The husband should give his wife
what she deserves as his wife. And the wife
should give her husband what he deserves as
her husband. 4 The wife does not have power
over her own body. Her husband has the power
over her body. And the husband does not have

6:16 Quote from Gen. 2:24.

12"मैं कुछ भी करने को स्वतन्त्र हूँ।" किन्तु हर
कोई बात हितकर नहीं होती। हाँ! "मैं सब कुछ करने
को स्वतन्त्र हूँ।" किन्तु मैं अपने पर किसी को भी हावी
नहीं होने दूँगा। 13कहा जाता है, "भोजन पेट के लिये
और पेट भोजन के लिये है।" किन्तु परमेश्वर इन दोनों
को ही समाप्त कर देगा। और हमारे शरीर भी तो यौन-
अनाचार के लिये नहीं हैं बल्कि प्रभु की सेवा के लिये
हैं। और प्रभु हमारी देह के कल्याण के लिये है।
14परमेश्वर ने केवल प्रभु को ही पुनर्जीवित नहीं किया
बल्कि अपनी शक्ति से वह मृत्यु से हम सब को भी
जिला उठायेगा। 15क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे
शरीर स्वयं यीशु मसीह से जुड़े हैं? तो क्या मुझे
उन्हें, जो मसीह के अंग हैं, किसी वेश्या के अंग बना
देना चाहिये? 16निश्चय ही नहीं। अथवा क्या तुम
यह नहीं जानते, कि जो अपने आपको वेश्या से जोड़ता
है, वह उसके साथ एक देह हो जाता है। शास्त्र में
कहा गया है: "क्योंकि वे दोनों एक देह हो
जायेंगे।"* 17किन्तु वह जो अपनी लौ प्रभु से
लगाता है, उसकी आत्मा में एकाकार हो जाता है।

18यौनाचार से दूर रहो। दूसरे सभी पाप जिन्हें
एक व्यक्ति करता है, उसके शरीर से बाहर होते हैं
किन्तु ऐसा व्यक्ति जो व्यभिचार करता है वह तो
अपने शरीर के ही विरुद्ध पाप करता है। 19अथवा
क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे शरीर उस पवित्र
आत्मा के मन्दिर हैं जिसे तुमने परमेश्वर से पाया
है और जो तुम्हारे भीतर निवास करता है। और
वह आत्मा तुम्हारा अपना नहीं है, 20क्योंकि परमेश्वर
ने तुम्हें कीमत चुका कर खरीदा है। इसलिए अपने
शरीरों के द्वारा परमेश्वर को महिमा प्रदान करो।

विवाह

7 अब उन बातों के बारे में जो तुमने लिखीं
थीं: अच्छा यह है कि कोई पुरुष किसी स्त्री
को छुए ही नहीं। 2किन्तु यौन अनैतिकता की
घटनाओं की सम्भावनाओं के कारण हर पुरुष की
अपनी पत्नी होनी चाहिये और हर स्त्री का अपना
पति। 3पति को चाहिये कि पत्नी के रूप में जो
कुछ पत्नी का अधिकार बनता है, उसे दे। और
इसी प्रकार पत्नी को भी चाहिये कि पति को
उसका यथोचित प्रदान करे। 4अपने शरीर पर पत्नी
का कोई अधिकार नहीं हैं बल्कि उसके पति का
है। और इसी प्रकार पति का भी उसके अपने शरीर
पर कोई अधिकार नहीं है, बल्कि उसकी पत्नी का

6:16 देखें उत्पत्ति 2:24

power over his own body. His wife has the power over his body. 5 Don't refuse to give your bodies to each other. But you might both agree to stay away from sex for a while so that you can give your time to prayer. Then come together again so that Satan will not be able to tempt you in your weakness. 6 I say this only to give you permission to be separated for a time. It is not a rule. 7 I wish everyone could be like me. But God has given each person a different ability. He makes some able to live one way, others to live a different way.

8 Now for those who are not married and for the widows I say this: It is good for you to stay single like me. 9 But if you cannot control your body, then you should marry. It is better to marry than to burn with sexual desire.

10 Now, I have a command for those who are married. Actually, it is not from me; it is what the Lord commanded. A wife should not leave her husband. 11 But if a wife does leave, she should remain single or get back together with her husband. And a husband should not divorce his wife.

12 The advice I have for the others is from me. The Lord did not give us any teaching about this. If you have a wife who is not a believer, you should not divorce her if she will continue to live with you. 13 And if you have a husband who is not a believer, you should not divorce him if he will continue to live with you. 14 The husband who is not a believer is set apart for God through his believing wife. And the wife who is not a believer is set apart for God through her believing husband. If this were not true, your children would be unfit for God's use. But now they are set apart for him.

15 But if the husband or wife who is not a believer decides to leave, let them leave. When this happens, the brother or sister in Christ is free. God chose you to have a life of peace. 16 Wives, maybe you will save your husband; and husbands, maybe you will save your wife. You don't know now what will happen later.

है। 5अपने आप को प्रार्थना में समर्पित करने के लिये थोड़े समय तक एक दूसरे से समागम न करने की आपसी सहमती को छोड़कर, एक दूसरे को संभोग से वंचित मत करो। फिर आत्म-संयम के अभाव के कारण कहीं शैतान तुम्हें किसी परीक्षा में न डाल दे, इसलिए तुम फिर समागम कर लो। 6मैं यह एक छूट के रूप में कह रहा हूँ, आदेश के रूप में नहीं। 7मैं तो चाहता हूँ सभी लोग मेरे जैसे होते। किन्तु हर व्यक्ति को परमेश्वर से एक विशेष बरदान मिला है। किसी का जीने का एक ढंग है तो दूसरे का दूसरा।

8अब मुझे अविवाहितों और विधवाओं के बारे में यह कहना है: यदि वे मेरे समान अकेले ही रहें तो उनके लिए यह उत्तम रहेगा। 9किन्तु यदि वे अपने आप पर काबू न रख सकें तो उन्हें विवाह कर लेना चाहिये; क्योंकि वासना की आग में जलते रहने से विवाह कर लेना अच्छा है।

10अब जो विवाहित हैं उनको मेरा यह आदेश है। यद्यपि यह मेरा नहीं है, बल्कि प्रभु का आदेश है, कि किसी पत्नी को अपना पति नहीं त्यागना चाहिये। 11किन्तु यदि वह उसे छोड़ ही दे तो उसे फिर अनब्याहा ही रहना चाहिये या अपने पति से मेल-मिलाप कर लेना चाहिये। और ऐसे ही पति को भी अपनी पत्नी को छोड़ना नहीं चाहिये।

12अब शेष लोगों से मेरा यह कहना है: (यह मैं कह रहा हूँ न कि प्रभु) यदि किसी मसीही भाई की कोई एसी पत्नी है जो इस मत में विश्वास नहीं रखती और उसके साथ रहने को सहमत है तो उसे त्याग नहीं देना चाहिये। 13ऐसे ही यदि किसी स्त्री का कोई ऐसा पति है जो पंथ का विश्वासी नहीं है किन्तु उसके साथ रहने को सहमत है तो उस स्त्री को भी अपना पति त्यागना नहीं चाहिये। 14क्योंकि वह अविश्वासी पति विश्वासी पत्नी से निकट संबन्धों के कारण पवित्र हो जाता है और इसी प्रकार वह अविश्वासिनी पत्नी भी अपने विश्वासी पति के निरन्तर साथ रहने से पवित्र हो जाती है। नहीं तो तुम्हारी संतान अस्वच्छ हो जाती किन्तु अब तो वे पवित्र हैं।

15फिर भी यदि कोई अविश्वासी अलग होना चाहता है तो वह अलग हो सकता है। ऐसी स्थितियों में किसी मसीही भाई या बहन पर कोई बंधन लागू नहीं होगा। परमेश्वर ने हमें शांति के साथ रहने को बुलाया है। 16हे पत्नियों, क्या तुम जानती हो? हो सकता है तुम अपने अविश्वासी पति को बचा लो।

Live as God Called You

17 But each one of you should continue to live
the way the Lord God has given you to live—the
way you were when God chose you. I tell people
in all the churches to follow this rule. 18 If a man
was already circumcised when he was chosen,
he should not change his circumcision. If a man
was without circumcision when he was chosen,
he should not be circumcised. 19 It is not
important if anyone is circumcised or not. What
is important is obeying God's commands. 20 Each
one of you should stay the way you were when
God chose you. 21 If you were a slave when God
chose you, don't let that bother you. But if you
can be free, then do it. 22 If you were a slave
when the Lord chose you, you are now free in
the Lord. You belong to the Lord. In the same
way, if you were free when you were chosen,
you are now Christ's slave. 23 God paid a high
price for you, so don't be slaves to anyone else.
24 Brothers and sisters, in your new life with
God, each one of you should continue the way
you were when God chose you.

Questions About Getting Married

25 Now I write about people who are not
married. I have no command from the Lord about
this, but I give my opinion. And I can be trusted,
because the Lord has given me mercy. 26 This is
a time of trouble. So I think it is good for you to
stay the way you are. 27 If you have a wife, don't
try to get free from her. If you are not married,
don't try to find a wife. 28 But if you decide to
marry, that is not a sin. And it is not a sin for a
girl who has never married to get married. But
those who marry will have trouble in this life,
and I want you to be free from this trouble.

29 Brothers and sisters, this is what I mean:
We don't have much time left. So starting
now, those who have wives should be the
same as those who don't. 30 It should not be
important whether you are sad or whether you
are happy. If you buy something, it should not
matter to you that you own it. 31 You should use
the things of the world without letting them

जैसे हो, वैसे जिओ

17प्रभु ने जिसको जैसा दिया है और जिसको
जिस रूप में चुना है, उसे वैसे ही जीना चाहिये।
सभी कलीसियों में मैं इसी का आदेश देता हूँ।
18जब किसी को परमेश्वर के द्वारा बुलाया गया,
तब यदि वह ख़तना युक्त था तो उसे अपना ख़तना
छिपाना नहीं चाहिये। और किसी को ऐसी दशा में
बुलाया गया जब वह बिना ख़तने के था तो उसका
ख़तना कराना नहीं चाहिये। 19ख़तना तो कुछ नहीं
है, और न ही ख़तना नहीं होना कुछ है। बल्कि
परमेश्वर के आदेशों का पालन करना ही सब कुछ
है। 20हर किसी को उसी स्थिति में रहना चाहिये,
जिसमें उसे बुलाया गया है। 21क्या तुझे दास के
रूप में बुलाया गया है? तू इसकी चिंता मत कर।
किन्तु यदि तू स्वतन्त्र हो सकता है तो आगे बढ़
और अवसर का लाभ उठा। 22क्योंकि जिसे प्रभु
के दास के रूप में बुलाया गया, वह तो प्रभु का
स्वतन्त्र व्यक्ति है। इसी प्रकार जिसे स्वतन्त्र व्यक्ति
के रूप में बुलाया गया, वह मसीह का दास है।
23परमेश्वर ने कीमत चुका कर तुम्हें खरीदा है।
इसलिए मनुष्यों के दास मत बनो। 24हे भाईयों,
तुम्हें जिस भी स्थिति में बुलाया गया है, परमेश्वर
के सामने उसी स्थिति में रहो।

विवाह करने सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर

25अविवाहितों के सम्बन्ध में प्रभु की ओर से मुझे
कोई आदेश नहीं मिला है। इसीलिए मैं प्रभु की दया
प्राप्त करके विश्वासनीय होने के कारण अपनी राय
देता हूँ। 26मैं सोचता हूँ कि इस वर्तमान संकट के
कारण यही अच्छा है कि कोई व्यक्ति मेरे समान ही
अकेला रहे। 27यदि तुम विवाहित हो तो उससे छुटकारा
पाने का यत्न मत करो। यदि तुम स्त्री से मुक्त हो तो
उसे खोजो मत। 28किन्तु यदि तुम्हारा जीवन विवाहित
है तो तुमने कोई पाप नहीं किया है। और यदि कोई
कुँवारी कन्या विवाह करती है, तो कोई पाप नहीं
करती है किन्तु ऐसे लोग शारीरिक कष्ट उठायेंगे जिनसे
मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ।

29हे भाईयों, मैं तो यही कह रहा हूँ, वक्त बहुत
थोड़ा है। इसलिए अब से आगे, जिनके पास पत्नियाँ
हैं, वे ऐसे रहें, मानो उनके पास पत्नियाँ हैं ही
नहीं। 30और वे जो बिलख रहे हैं, वे ऐसे रहें,
मानो कभी दुखी ही न हुए हों। और जो आनान्दित
हैं, वे ऐसे रहें, मानो प्रसन्न ही न हुए हों। और वे
जो वस्तुएँ मोल लेते हैं, ऐसे रहें मानो उनके पास
कुछ भी न हो। 31और जो सांसारिक सुख-विलासों

become important to you. This is how you should live, because this world, the way it is now, will soon be gone.

32 I want you to be free from worry. A man who is not married is busy with the Lord's work. He is trying to please the Lord. 33 But a man who is married is busy with things of the world. He is trying to please his wife. 34 He must think about two things—pleasing his wife and pleasing the Lord. A woman who is not married or a girl who has never married is busy with the Lord's work. She wants to give herself fully—body and spirit—to the Lord. But a married woman is busy with things of the world. She is trying to please her husband. 35 I am saying this to help you. I am not trying to limit you, but I want you to live in the right way. And I want you to give yourselves fully to the Lord without giving your time to other things.

36 A man might think that he is not doing the right thing with his fiancée. She might be almost past the best age to marry. So he might feel that he should marry her. He should do what he wants. It is no sin for them to get married. 37 But another man might be more sure in his mind. There may be no need for marriage, so he is free to do what he wants. If he has decided in his own heart not to marry his fiancée, he is doing the right thing. 38 So the man who marries his fiancée does right, and the man who does not marry does better.

39 A woman should stay with her husband as long as he lives. But if the husband dies, the woman is free to marry any man she wants, but he should belong to the Lord. 40 The woman is happier if she does not marry again. This is my opinion, and I believe that I have God's Spirit.

About Food Offered to Idols

8 Now I will write about meat that is sacrificed to idols. It is certainly true that "we all have

32मैं चाहता हूँ आप लोग चिंताओं से मुक्त रहें। एक अविवाहित व्यक्ति प्रभु सम्बन्धी विषयों के चिंतन में लगा रहता है कि वह प्रभु को कैसे प्रसन्न करे। 33किन्तु एक विवाहित व्यक्ति सांसारिक विषयों में ही लिप्त रहता है कि वह अपनी पत्नी को कैसे प्रसन्न कर सकता है। 34इस प्रकार उसका व्यक्तित्व बँट जाता है। और ऐसे ही किसी अविवाहित स्त्री या कुँवारी कन्या को जिसे बस प्रभु सम्बन्धी विषयों की ही चिंता रहती है। जिससे वह अपने शरीर और अपनी आत्मा से पवित्र हो सके। किन्तु एक विवाहित स्त्री सांसारिक विषयभोगों में इस प्रकार लिप्त रहती है कि वह अपने पति को रिझाती रह सके। 35ये मैं तुमसे तुम्हारे भले के लिये ही कह रहा हूँ तुम पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये नहीं। बल्कि अच्छी व्यवस्था को हित में और इसलिए भी कि तुम चित्त की चंचलता के बिना प्रभु को समर्पित हो सको।

36यदि कोई सोचता है कि वह अपनी युवा हो चुकी कुँवारी प्रिया के प्रति उचित नहीं कर रहा है और यदि उसकी कामभावना तीव्र है, तथा दोनों को ही आगे बढ़ कर विवाह कर लेने की आवश्यकता है, तो जैसा वह चाहता है, उसे आगे बढ़ कर वैसा कर लेना चाहिये। वह पाप नहीं कर रहा है। उन्हें विवाह कर लेना चाहिये। 37किन्तु जो अपने मन में बहुत पक्का है और जिस पर कोई दबाव भी नहीं हैं, बल्कि जिसका अपनी इच्छाओं पर भी पूरा बस है और जिसने अपने मन में पूरा निश्चय कर लिया है कि वह अपनी प्रिया से विवाह नहीं करेगा तो वह अच्छा ही कर रहा है। 38सो वह जो अपनी प्रिया से विवाह कर लेता है, अच्छा करता है और जो उससे विवाह नहीं करता, वह और भी अच्छा करता है।

39जब तक किसी स्त्री का पति जीवित रहता है, तभी तक वह विवाह के बन्धन में बँधी होती है किन्तु यदि उसके पति को देहान्त हो जाता है, तो जिसके साथ चाहे, विवाह करने, वह स्वतन्त्र है किन्तु केवल प्रभु में। 40पर यदि जैसी वह है, वैसी ही रहती है तो अधिक प्रसन्न रहेगी। यह मेरा विचार है। और मैं सोचता हूँ कि मुझमें भी परमेश्वर के आत्मा का ही निवास है।

चढ़ावे का भोजन

8 अब मूर्तियों पर चढ़ाई गई बलि के विषय में हम यह जानते हैं, "हम सभी ज्ञानी है।"

knowledge," as you say. But this knowledge only fills people with pride. It is love that helps the church grow stronger. 2 Those who think they know something do not yet know anything as they should. 3 But whoever loves God is known by God.

4 So this is what I say about eating meat: We know that an idol is really nothing in the world, and we know that there is only one God. 5 It's really not important if there are things called gods in heaven or on earth—and there are many of these "gods" and "lords" out there. 6 For us there is only one God, and he is our Father. All things came from him, and we live for him. And there is only one Lord, Jesus Christ. All things were made through him, and we also have life through him.

7 But not all people know this. Some have had the habit of worshiping idols. So now when they eat meat, they still feel as if it belongs to an idol. They are not sure that it is right to eat this meat. So when they eat it, they feel guilty. 8 But food will not bring us closer to God. Refusing to eat does not make us less pleasing to God, and eating does not make us closer to him.

9 But be careful with your freedom. Your freedom to eat anything may make those who have doubts about what they can eat fall into sin. 10 You understand that it's all right to eat anything, so you can eat even in an idol's temple. But someone who has doubts might see you eating there, and this might encourage them to eat meat sacrificed to idols too. But they really think it is wrong. 11 So this weak brother or sister—someone Christ died for—is lost because of your better understanding. 12 When you sin against your brothers and sisters in Christ in this way and you hurt them by causing them to do things they feel are wrong, you are also sinning against Christ. 13 So if the food I eat makes another believer fall into sin, I will never eat meat again. I will stop eating meat, so that I will not make my brother or sister sin.

Rights That Paul Has Not Used

9 I am a free man. I am an apostle. I have seen Jesus our Lord. You people are an example of

"ज्ञान" लोगों को अहंकार से भर देता है। किन्तु प्रेम से व्यक्ति अधिक शक्तिशाली बनता है। 2यदि कोई सोचे कि वह कुछ जानता है तो जिसे जानना चाहिये उसके बारे में तो उसने अभी कुछ जाना ही नहीं। 3यदि कोई परमेश्वर को प्रेम करता है तो वह परमेश्वर के द्वारा जाना जाता है।

4सो मूर्तियों पर चढ़ाये गये भोजन के बारे में हम जानते हैं कि इस संसार में वास्तविक प्रतिमा कहीं नहीं है। और यह कि 'परमेश्वर केवल एक ही है।' 5और धरती या आकाश में यद्यपि तथाकथित देवता बहुत से हैं (बहुत से "देवता" हैं, बहुत से "प्रभु" हैं।) 6किन्तु हमारे लिये तो एक ही परमेश्वर है, हमारा पिता। उसी से सब कुछ आता है। और उसी के लिये हम जीते हैं। प्रभु केवल एक है, यीशु मसीह। उसी के द्वारा सब वस्तुओं का अस्तित्व है और उसी के द्वारा हमारा जीवन है।

7किन्तु यह ज्ञान हर किसी के पास नहीं है। कुछ लोग जो अब तक मूर्ति उपासना के आदी हैं, ऐसी वस्तुएँ खाते हैं और सोचते है जैसे मानो वे वस्तुएँ मूर्ति का प्रसाद हों। उनके इस कर्म से उनकी आत्मा निर्बल होने के कारण दूषित हो जाती है। 8किन्तु वह प्रसाद तो हमें परमेश्वर के निकट नहीं ले जायेगा। यदि हम उसे न खायें तो कुछ घट नहीं जाता और यदि खायें तो कुछ बढ़ नहीं जाता।

9सावधान रहो! कहीं तुम्हारा यह अधिकार उनके लिये, जो दुर्बल हैं, पाप में गिरने का कारण न बन जाये। 10क्योंकि दुर्बल मन का कोई व्यक्ति यदि तुझ जैसे इस विषय के जानकार को मूर्ति वाले मन्दिर में खाते हुए देखता है तो उसका दुर्बल मन क्या उस हद तक नहीं भटक जायेगा कि वह मूर्ति पर बलि चढ़ाई गयी वस्तुओं को खाने लगे। 11तेरे ज्ञान से, दुर्बल मन के व्यक्ति का तो नाश ही हो जायेगा तेरे उसी बन्धु का, जिसके लिए मसीह ने जान दे दी। 12इस प्रकार अपने भाईयों के विरुद्ध पाप करते हुए और उनके दुर्बल मन को चोट पहुँचाते हुए तुम लोग मसीह के विरुद्ध पाप कर रहे हो। 13इसलिए यदि भोजन मेरे भाई को पाप की राह पर बढ़ाता है तो मैं फिर कभी भी माँस नहीं खाऊँगा ताकि मैं अपने भाई के लिए, पाप करने की प्रेरणा न बनूँ!

पौलुस भी दूसरे प्रेरितों जैसा ही है

9 क्या मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ? क्या मैं भी एक प्रेरित नहीं हूँ? क्या मैंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के

my work in the Lord. 2 Others may not accept me as an apostle, but surely you do. You are proof that I am an apostle in the Lord.

3 Some people want to judge me. So this is the answer I give them: 4 We have the right to eat and drink, don't we? 5 We have the right to bring a believing wife with us when we travel, don't we? The other apostles and the Lord's brothers and Peter all do this. 6 And are Barnabas and I the only ones who must work to earn our living? 7 No soldier ever serves in the army and pays his own salary. No one ever plants a vineyard without eating some of the grapes himself. No one takes care of a flock of sheep without drinking some of the milk himself.

8 These aren't just my own thoughts. God's law says the same thing. 9 Yes, it is written in the Law of Moses: "When a work animal is being used to separate grain, don't keep it from eating the grain."* When God said this, was he thinking only about work animals? No. 10 He was really talking about us. Yes, that was written for us. The one who plows and the one who separates the grain should both expect to get some of the grain for their work. 11 We planted spiritual seed among you, so we should be able to harvest from you some things for this life. Surely that is not asking too much. 12 Others have this right to get things from you. So surely we have this right too. But we don't use this right. No, we endure everything ourselves so that we will not stop anyone from obeying the Good News of Christ. 13 Surely you know that those who work at the Temple get their food from the Temple. And those who serve at the altar get part of what is offered at the altar. 14 It is the same with those who have the work of telling the Good News. The Lord has commanded that those who tell the Good News should get their living from this work.

दर्शन नहीं किये हैं? क्या तुम लोग प्रभु में मेरे ही कर्म का परिणाम नहीं हो? 2चाहे दूसरों के लिये मैं प्रेरित न भी होऊँ - तो भी मैं तुम्हारे लिये तो प्रेरित हूँ ही। क्योंकि तुम एक ऐसी मुहर के समान हो जो प्रभु में मेरे प्रेरित होने को प्रमाणित करती है।

3वे लोग जो मेरी जाँच करना चाहते हैं, उनके प्रति आत्मरक्षा में मेरा उत्तर यह है: 4क्या मुझे खाने पीने का अधिकार नहीं है? 5क्या मुझे यह अधिकार नहीं कि मैं अपनी विश्वासिनी पत्नी को अपने साथ ले जाऊँ? जैसा कि दूसरे प्रेरित, प्रभु के बन्धु और पतरस ने किया है। 6अथवा क्या बरनाबास और मुझे ही अपनी आजीविका कमाने के लिये कोई काम करना चाहिए? 7सेना में ऐसा कौन होगा जो अपने ही खर्च पर एक सिपाही के रूप में काम करे। अथवा कौन होगा जो अंगूर की बगीया लगाकर भी उसका फल न चखे? या कोई ऐसा है जो भेड़ों के रेवड़ की देखभाल तो करता हो पर उनका थोड़ा बहुत भी दूध न पीता हो?

8क्या मैं मानवीय चिन्तन के रूप में ही ऐसा कह रहा हूँ? आखिरकार क्या व्यवस्था का विधान भी ऐसा ही नहीं कहता? 9मूसा की व्यवस्था के विधान में लिखा है, "खलिहान में बैल का मुँह मत बाँधो।"* परमेश्वर क्या केवल बैलों के बारे में बता रहा है? 10नहीं! निश्चित रूप से वह इसे क्या हमारे लिये नहीं बता रहा? हाँ, यह हमारे लिये ही लिखा गया था। क्योंकि खेत जोतने वाला किसी आशा से ही खेत जोतने और खलिहान में भूसे से अनाज अलग करने वाला फसल का कुछ भाग पाने की आशा तो रखेगा ही। 11फिर यदि हमने तुम्हारे हित के लिये आध्यात्मिकता के बीज बोये हैं तो हम तुमसे भौतिक वस्तुओं की फसल काटना चाहते हैं, यह क्या कोई बहुत बड़ी बात है? 12यदि दूसरे लोग तुमसे भौतिक वस्तुएँ पाने का अधिकार रखते हैं तो हमारा तो तुम पर क्या और भी अधिक अधिकार नहीं है? किन्तु हमने इस अधिकार का उपयोग नहीं किया है। बल्कि हम तो सब कुछ सहते रहे हैं ताकि हम मसीह सुसमाचार के मार्ग में कोई बाधा न डाल दें। 13क्या तुम नहीं जानते कि जो लोग मंदिर में काम करते हैं, वे अपना भोजन मन्दिर से ही पाते हैं। और जो नियमित रूप से वेदी की सेवा करते हैं, वेदी के चढ़ावे में उनका हिस्सा होता है? 14इसी प्रकार प्रभु ने व्यवस्था दी है कि सुसमाचार के प्रचारकों की आजीविका सुसमाचार के प्रचार से ही होनी चाहिये।

9:9 Quote from Deut. 25:4.

9:9 देखें व्यवस्था. 25:4

15 But I have not used any of these rights, and
I am not trying to get anything from you. That is
not my purpose for writing this. I would rather
die than to have someone take away what for me
is a great source of pride. 16 It's not my work of
telling the Good News that gives me any reason
to boast. That is my duty—something I must do.
If I don't tell people the Good News, I am in real
trouble. 17 If I did it because it was my own
choice, I would deserve to be paid. But I have no
choice. I must tell the Good News. So I am only
doing the duty that was given to me. 18 So what
do I get for doing it? My reward is that when I
tell people the Good News I can offer it to them
for free and not use the rights that come with
doing this work.

19 I am free. I belong to no other person,
but I make myself a slave to everyone. I do this
to help save as many people as I can. 20 To the
Jews I became like a Jew so that I could help
save Jews. I myself am not ruled by the law,
but to those who are ruled by the law I
became like someone who is ruled by the law.
I did this to help save those who are ruled by
the law. 21 To those who are without the law
I became like someone who is without the law.
I did this to help save those who are
without the law. (But really, I am not
without God's law—I am ruled by the law of
Christ.) 22 To those who are weak, I became
weak so that I could help save them. I have
become all things to all people. I did this so
that I could save people in any way possible.
23 I do all this to make the Good News known. I
do it so that I can share in the blessings of the
Good News.

24 You know that in a race all the runners
run, but only one runner gets the prize. So
run like that. Run to win! 25 All who compete in
the games use strict training. They do this so
that they can win a prize—one that doesn't
last. But our prize is one that will last forever.
26 So I run like someone who has a goal. I fight
like a boxer who is hitting something, not

15किन्तु इन अधिकारों में से मैंने एक का भी कभी
प्रयोग नहीं किया। और ये बातें मैंने इसलिए लिखी भी
नहीं हैं कि ऐसा कुछ मेरे विषय में किया जाये। बजाय
इसके कि कोई मुझ से उस बात को ही छीन ले
जिसका मुझे गर्व है। इस से तो मैं मर जाना ही ठीक
समझूँगा। 16इसलिए यदि मैं सुसमाचार का प्रचार
करता हूँ तो इसमें मुझे गर्व करने का कोई हेतु नहीं है
क्योंकि मेरा तो यह कर्तव्य है। और यदि मैं सुसमाचार
का प्रचार न करूँ तो मेरे लिए यह कितना बुरा होगा।
17फिर यदि यह मैं अपनी इच्छा से करता हूँ तो मैं
इसका फल पाने योग्य हूँ, किन्तु यदि अपनी इच्छा से
नहीं बल्कि किसी नियुक्ति के कारण यह काम मुझे
सौंपा गया है 18तो फिर मेरा प्रतिफल काहे का। इसलिए
जब मैं सुसमाचार का प्रचार करूँ तो बिना कोई मूल्य
लिये ही उसे करूँ। ताकि सुसमाचार के प्रचार में जो
कुछ पाने का मेरा अधिकार है, मैं उसका पूरा उपयोग
न करूँ।

19यद्यपि मैं किसी भी व्यक्ति के बन्धन में नहीं
हूँ, फिर भी मैंने स्वयं को आप सब का सेवक बना
लिया है। ताकि मैं अधिकतर लोगों को जीत सकूँ।
20यहूदियों के लिये मैं एक यहूदी जैसा बना, ताकि
मैं यहूदियों को जीत सकूँ। जो लोग व्यवस्था के
विधान के अधीन हैं, उनके लिये मैं एक ऐसा
व्यक्ति बना जो व्यवस्था के विधान के अधीन जैसा
है। यद्यपि मैं स्वयं व्यवस्था के विधान के अधीन
नहीं हूँ। यह मैंने इसलिए किया कि मैं व्यवस्था के
विधान के अधीनों को जीत सकूँ। 21मैं एक ऐसा
व्यक्ति भी बना जो व्यवस्था के विधान को नहीं
मानता। यद्यपि मैं परमेश्वर की व्यवस्था से रहित
नहीं हूँ बल्कि मसीह की व्यवस्था के अधीन हूँ।
ताकि मैं जो व्यवस्था के विधान को नहीं मानते हैं
उन्हें जीत सकूँ। 22जो दुर्बल हैं, उनके लिये मैं
दुर्बल बना ताकि मैं दुर्बलों को जीत सकूँ। हर
किसी के लिये मैं हर किसी के जैसा बना ताकि
हर सम्भव उपाय से उनका उद्धार कर सकूँ। 23यह
सब कुछ मैं सुसमाचार के लिये करता हूँ ताकि
इसके वरदानों में मेरा भी कुछ भाग हो।

24क्या तुम लोग यह नहीं जानते कि खेल के मैदान
में दौड़ते तो सभी धावक हैं किन्तु पुरस्कार किसी एक
को ही मिलता है। ऐसे दौड़ो कि जीत तुम्हारी ही हो!
25किसी खेल प्रतियोगिता में प्रत्येक प्रतियोगी को हर
प्रकार का आत्मसंयम करना होता है। वे एक नाशमान
जयमाल से सम्मानित होने के लिये ऐसा करते हैं
किन्तु हम तो एक अविनाशी मुकुट को पाने के लिये
यह करते हैं। 26इस प्रकार मैं उस व्यक्ति के समान

just the air. 27 It is my own body I fight to make it do what I want. I do this so that I won't miss getting the prize myself after telling others about it.

Warning From History

10 Brothers and sisters, I want you to know what happened to our ancestors who were with Moses. They were all under the cloud, and they all walked through the sea. 2 They were all baptized into Moses in the cloud and in the sea. 3 They all ate the same spiritual food, 4 and they all drank the same spiritual drink. They drank from that spiritual rock that was with them, and that rock was Christ. 5 But God was not pleased with most of those people, so they were killed in the desert.

6 And these things that happened are examples for us. These examples should stop us from wanting evil things like those people did. 7 Don't worship idols as some of them did. As the Scriptures say, "The people sat down to eat and drink and then got up to have a wild party." 8 We should not commit sexual sins as some of them did. In one day 23,000 of them died because of their sin. 9 We should not test Christ* as some of them did. Because of that, they were killed by snakes. 10 And don't complain as some of them did. Because they complained, they were killed by the angel that destroys.

11 The things that happened to those people are examples. They were written to be warnings for us. We live in the time that all those past histories were pointing to. 12 So anyone who thinks they are standing strong should be careful that they don't fall. 13 The only temptations that you have are the same temptations that all people have. But you can trust God. He will not let you be tempted more than you can bear. But when you are tempted, God will also give you a way to escape that temptation. Then you will be able to endure it.

दौड़ता हूँ जिसके सामने एक लक्ष्य है। मैं हवा में मुक्के नहीं मारता। 27बल्कि मैं तो अपने शरीर को कठोर अनुशासन में तपा कर, उसे अपने वश में करता हूँ। ताकि कहीं ऐसा न हो जाय कि दूसरों को उपदेश देने के बाद परमेश्वर के द्वारा मैं ही व्यर्थ ठहरा दिया जाऊँ!

यहूदियों जैसे मत बनो

10 हे भाईयों, मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि हमारे सभी पूर्वज बादल की छत्र छाया में सुरक्षा पूर्वक लाल सागर पार कर गए थे। 2उन सब को बादल के नीचे, समुद्र के बीच मूसा के अनुयायियों के रूप में बपतिस्मा दिया गया था। 3उन सभी ने समान आध्यात्मिक भोजन खाया था। 4और समान आध्यात्मिक जल पिया था क्योंकि वे अपने साथ चल रही उस आध्यात्मिक चट्टान से ही जल ग्रहण कर रहे थे। और वह चट्टान थी मसीह। 5किन्तु उनमें से अधिकांश लोगों से परमेश्वर प्रसन्न नहीं था, इसीलिए वे मरुभूमि में मारे गये।

6ये बातें ऐसे घटीं कि हमारे लिये उदाहरण सिद्ध हों और हम बूरी बातों की कामना न करें जैसे उन्होंने की थी। 7मूर्ति-पूजक मत बनो, जैसे कि उनमें से कुछ थे। शास्त्र कहता है: "व्यक्ति खाने पीने के लिये बैठा और परस्पर आनन्द मनाने के लिए उठा।" 8सो आओ हम कभी व्यभिचार न करें जैसे उनमें से कुछ किया करते थे। इसी नाते उनमें से 23,000 व्यक्ति एक ही दिन मर गए। 9आओ हम मसीह* की परीक्षा न लें, जैसे कि उनमें से कुछ ने ली थी। परिणामस्वरूप साँपों के काटने से वे मर गए। 10शिकवा शिकायत मत करो जैसे कि उनमें से कुछ किया करते थे और इसी कारण विनाश के स्वर्गदूत द्वारा मार डाले गए।

11ये बातें उनके साथ ऐसे घटीं कि उदाहरण रहे। और उन्हें लिख दिया गया कि हमारे लिए जिन पर युगों का अन्त उतरा हुआ है, चेतावनी रहे। 12इसलिए जो यह सोचता है कि वह दृढ़ता के साथ खड़ा है, उसे सावधान रहना चाहिये कि वह गिर न पड़े। 13तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े हो, जो मनुष्यों के लिये सामान्य नहीं है। परमेश्वर विश्वसनीय है। वह तुम्हारी सहन शक्ति से अधिक तुम्हें परीक्षा में नहीं पड़ने देगा। परीक्षा के साथ साथ उससे बचने का मार्ग भी वह तुम्हें देगा ताकि तुम परीक्षा को उत्तीर्ण कर सको।

10:9 ***Christ*** Some Greek copies say, "the Lord."

10:9 मसीह कुछ यूनानी प्रतियों में है, "प्रभु।"

14 So, my dear friends, stay away from
worshiping idols. 15 You are intelligent people.
Judge for yourselves the truth of what I say now.
16 The cup of blessing that we give thanks for is
a sharing in the blood sacrifice of Christ, isn't it?
And the bread that we break is a sharing in the
body of Christ, isn't it?
17 There is one loaf of bread, so we who are
many are one body, because we all share in that
one loaf.
18 And think about what the people of Israel
do. When they eat the sacrifices, they are united
by sharing what was offered on the altar. 19 So,
am I saying that sacrifices to idols are the same as
those Jewish sacrifices? No, because an idol is
nothing, and the things offered to idols are worth
nothing. 20 But I am saying that when food is
sacrificed to idols, it is an offering to demons,
not to God. And I don't want you to share
anything with demons. 21 You cannot drink the
cup of the Lord and then go drink a cup that
honors demons. You cannot share a meal at the
Lord's table and then go share a meal that honors
demons. 22 Doing that would make the Lord
jealous. Do you really want to do that? Do you
think we are stronger than he is?

Use Your Freedom for God's Glory

23 "All things are allowed," you say. But not
all things are good. "All things are allowed." But
some things don't help anyone. 24 Try to do what
is good for others, not just what is good for
yourselves.
25 Eat any meat that is sold in the meat market.
Don't ask questions about it to see if it is
something you think is wrong to eat. 26 You can
eat it, "because the earth and everything in it
belong to the Lord."*
27 Someone who is not a believer might invite
you to eat with them. If you want to go, then eat
anything that is put before you. Don't ask
questions to see if it is something you think is
wrong to eat. 28 But if someone tells you, "That

14हे मेरे प्रिय मित्रों, अंत में मैं कहता हूँ मूर्ति
उपासना से दूर रहो। 15तुम्हें समझदार समझ कर
मैं ऐसा कह रहा हूँ। जो मैं कह रहा हूँ, उसे अपने
आप परखो। 16धन्यवाद का वह प्याला जिसके
लिये हम धन्यवाद देते हैं, वह क्या मसीह के लहू
में हमारी साझेदारी नहीं है? वह रोटी जिसे हम
विभाजित करते हैं, क्या यीशु की देह में हमारी
साझेदारी नहीं?
17रोटी का होना एक ऐसा तथ्य है, जिसका अर्थ
है कि हम सब एक ही शरीर से हैं। क्योंकि उस
एक रोटी में ही हम सब साझेदार हैं।
18उन इस्राएलियों के बारे में सोचो, जो बलि की
वस्तुएँ खाते हैं। क्या वे उस वेदी के साझेदार नहीं है?
19इस बात को मेरे कहने का प्रयोजन क्या है? क्या मैं
यह कहना चाहता हूँ कि मूर्तियों पर चढ़ाया गया भोजन
कुछ है या कि मूर्ति कुछ भी नहीं है, नहीं 20बल्कि मेरी
आशा तो यह है कि वे अधर्मी जो बलि चढ़ाते हैं, वे
उन्हें परमेश्वर के लिये नहीं, बल्कि दुष्ट आत्माओं के
लिये चढ़ाते हैं। और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं
के साझेदार बनो। 21तुम प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं
के कटोरे में से एक साथ नहीं पी सकते। तुम प्रभु के
भोजन की चौकी और दुष्टात्माओं के भोजन की चौकी,
दोनों में एक साथ हिस्सा नहीं बँटा सकते। 22क्या हम
प्रभु को चिढ़ाना चाहते हैं? क्या जितना शक्तिशाली
वह है, हम उससे अधिक शक्तिशाली है?

अपनी स्वतन्त्रता का प्रयोग परमेश्वर की महिमा के लिये करो

23"जैसा कि कहा गया है कि हम कुछ भी करने के
लिये स्वतन्त्र हैं। पर सब कुछ हितकारी तो नहीं है।
'हम कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र है' किन्तु हर
किसी बात से विश्वास सुदृढ़ तो नहीं होता। 24किसी
को भी मात्र स्वार्थ की ही चिन्ता नहीं करनी चाहिये
बल्कि औरों के परमार्थ की भी सोचनी चाहिये।
25बाजार में जो कुछ बिकता है, अपने अन्तर्मन के
अनुसार वह सब कुछ खाओ। उसके बारे में कोई प्रश्न
मत करो। 26क्योंकि शास्त्र कहता है: "यह धरती और
इस पर जो कुछ है, सब प्रभु का है।"*
27यदि अविश्वासियों में से कोई व्यक्ति तुम्हें
भोजन पर बुलाये और तुम वहाँ जाना चाहो तो
तुम्हारे सामने जो भी परोसा गया है, अपने अन्तर्मन
के अनुसार सब खाओ। कोई प्रश्न मत पूछो।
28किन्तु यदि कोई तुम लोगों को यह बताये, "यह

10:26 Quote from Ps. 24:1; 50:12; 89:11.

10:26 देखें भजन. 24:1; 50:12; 89:11

food was offered to idols," then don't eat it. That's because some people think it is wrong, and it might cause a problem for the person who told you that. 29 I don't mean that you think it is wrong. But the other person might think it is wrong. That's the only reason not to eat it. My own freedom should not be judged by what another person thinks. 30 I eat the meal with thankfulness. So I don't want to be criticized because of something I thank God for.

31 So if you eat, or if you drink, or if you do anything, do it for the glory of God. 32 Never do anything that might make other people do wrong—Jews, non-Jews, or anyone in God's church. 33 I do the same thing. I try to please everyone in every way. I am not trying to do what is good for me. I am trying to do what is good for the most people so that they can be saved.

11 Follow my example, just as I follow the example of Christ.

Being Under Authority

2 I praise you because you remember me in all things. You follow closely the teachings I gave you. 3 But I want you to understand this: The head of every man is Christ. And the head of a woman is the man. And the head of Christ is God.

4 Every man who prophesies or prays with his head covered brings shame to his head. 5 But every woman who prays or prophesies should have her head covered. If her head is not covered, she brings shame to her head. Then she is the same as a woman who has her head shaved. 6 If a woman does not cover her head, it is the same as cutting off all her hair. But it is shameful for a woman to cut off her hair or to shave her head. So she should cover her head.

7 But a man should not cover his head, because he is made like God and is God's glory. But woman is man's glory. 8 Man did not come from woman. Woman came from man. 9 And man was not made for woman. Woman was made for man.

देवता पर चढ़ाया गया चढ़ावा है" तो जिसने तुम्हें यह बताया है, उसके कारण और अपने अन्तर्मन के कारण उसे मत खाओ। 29मैं जब अन्तर्मन कहता हूँ तो मेरा अर्थ तुम्हारे अन्तर्मन से नहीं बल्कि उस दूसरे व्यक्ति के अन्तर्मन से है। एकमात्र यही कारण है। क्योंकि मेरी स्वतन्त्रता भला दूसरे व्यक्ति के अन्तर्मन द्वारा लिये गये निर्णय से सीमित क्यों रहे? 30यदि मैं धन्यवाद देकर, भोजन में हिस्सा लेता हूँ तो जिस वस्तु के लिये मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ, उसके लिये मेरी आलोचना नहीं की जानी चाहिये।

31इसलिए चाहे तुम खाओ, चाहे पिओ, चाहे कुछ और करो, बस सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो। 32यहूदियों के लिये या ग़ैर यहूदियों के लिये या जो परमेश्वर के कलीसिया के हैं, उनके लिये कभी बाधा मत बनो 33जैसे स्वयं हर प्रकार से हर किसी को प्रसन्न रखने का जतन करता हूँ, और बिना यह सोचे कि मेरा स्वार्थ क्या है, परमार्थ की सोचता हूँ ताकि उनका उद्धार हो।

11 सो तुम लोग वैसे ही मेरा अनुसरण करो जैसे मैं मसीह का अनुसरण करता हूँ।

अधीन रहना

2मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ। क्योंकि तुम मुझे हर समय याद करते रहते हो; और जो शिक्षाएँ मैंने तुम्हें दी हैं, उनका सावधानी से पालन कर रहे हो। 3पर मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि स्त्री का सिर पुरुष है, पुरुष का सिर मसीह है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।

4हर ऐसा पुरुष जो सिर ढक कर प्रार्थना करता है या परमेश्वर की ओर से बोलता है, वह परमेश्वर का अपमान करता है जो अपना सिर है। 5पर हर ऐसी स्त्री जो बिना सिर ढके प्रार्थना करती है या जनता में परमेश्वर की ओर से बोलती है, वह अपने पुरुष का अपमान करती है जो उसका सिर है। वह ठीक उस स्त्री के समान है जिसने अपना सिर मुँडवा दिया है। 6यदि कोई स्त्री अपना सिर नहीं ढकती तो वह अपने बाल भी क्यों नहीं मुँडवा लेती। किन्तु यदि स्त्री के लिये बाल मुँडवाना लज्जा की बात है तो उसे अपना सिर भी ढकना चाहिये।

7किन्तु पुरुष के लिये अपना सिर ढकना उचित नहीं है क्योंकि वह परमेश्वर के स्वरूप और महिमा का प्रतिबिम्ब है। किन्तु एक स्त्री अपने पुरुष की महिमा को प्रतिबिंबित करती है। 8मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ क्योंकि पुरुष किसी स्त्री से नहीं, बल्कि स्त्री पुरुष से बनी है। 9पुरुष स्त्री के लिये नहीं रचा गया बल्कि स्त्री

10 So that is why a woman should have her head
covered with something that shows she is under
authority. Also, she should do this because of the
angels.
11 But in the Lord the woman needs the man,
and the man needs the woman. 12 This is true
because woman came from man, but also man is
born from woman. Really, everything comes from
God.
13 Decide this for yourselves: Is it right for a
woman to pray to God without something on her
head? 14 Even nature itself teaches you that
wearing long hair is shameful for a man. 15 But
wearing long hair is a woman's honor. Long hair
is given to the woman to cover her head. 16 Some
people may still want to argue about this. But we
and the churches of God don't accept what those
people are doing.

The Lord's Supper

17 In the things I tell you now I don't praise
you. Your meetings hurt you more than they
help you. 18 First, I hear that when you meet
together as a church you are divided. And this is
not hard to believe 19 because of your idea that
you must have separate groups to show who the
real believers are!
20 When you all come together, it is not
really the Lord's Supper you are eating. 21 I say
this because when you eat, each one eats
without waiting for the others. Some people
don't get enough to eat or drink, while others
have too much. 22 You can eat and drink in
your own homes. It seems that you think
God's church is not important. You embarrass
those who are poor. What can I say?
Should I praise you? No, I cannot praise you for
this.
23 The teaching I gave you is the same that
I received from the Lord: On the night when
the Lord Jesus was handed over to be killed,
he took bread 24 and gave thanks for it. Then
he divided the bread and said, "This is my
body; it is for you. Eat this to remember me."

की रचना पुरुष के लिये की गयी है। 10इसलिए परमेश्वर
ने उसे जो अधिकार दिया है, उसके प्रतीक रूप में स्त्री
को चाहिये कि वह अपना सिर ढके। उसे स्वर्गदूतों के
कारण भी ऐसा करना चाहिये।
11फिर भी प्रभु में न तो स्त्री पुरुष से स्वतन्त्र हैं
और न ही पुरुष स्त्री से। 12क्योंकि जैसे पुरुष से
स्त्री आयी, वैसे ही स्त्री ने पुरुष को जन्म दिया।
किन्तु सब कोई परमेश्वर से आते हैं।
13स्वयं निर्णय करो। क्या जनता के बीच एक स्त्री
का सिर उघाड़े परमेश्वर की प्रार्थना करना अच्छा
लगता है? 14क्या स्वयं प्रकृति तुम्हें नहीं सिखाती कि
यदि कोई पुरुष अपने बाल लम्बे बढ़ने दे तो यह उसके
लिए लज्जा की बात है, 15और यह कि एक स्त्री के
लिए यही उसकी शोभा है? वास्तव में उसे उसके
लम्बे बाल एक प्राकृतिक ओढ़नी के रूप में दिये गये
हैं। 16अब इस पर यदि कोई विवाद करना चाहे तो
मुझे कहना होगा कि न तो हमारे यहाँ कोई एसी प्रथा
है और न ही परमेश्वर की कलीसिया में।

प्रभु का भोज

17अब यह अगला आदेश देते हुए मैं तुम्हारी प्रशंसा
नहीं कर रहा हूँ क्योंकि तुम्हारा आपस में मिलना
तुम्हारा भला करने की बजाय तुम्हें हानि पहुँचा रहा
है। 18सबसे पहले यह कि मैंने सुना है कि तुम लोग
सभा में जब परस्पर मिलते हो तो हुम्हारे बीच मतभेद
रहता है। कुछ अंश तक मैं इस पर विश्वास भी करता
हूँ। 19आखिरकार तुम्हारे बीच मतभेद भी होंगे ही।
जिससे कि तुम्हारे बीच में जो उचित ठहराया गया है,
वह सामने आ जाये।
20सो जब तुम आपस में इकट्ठे होते हो तो सचमुच
प्रभु का भोज पाने के लिये नहीं इकट्ठे होते, 21बल्कि
जब तुम भोज ग्रहण करते हो तो तुममें से हर कोई
आगे बढ़ कर अपने ही खाने पर टूट पड़ता है। और
बस कोई व्यक्ति तो भूखा ही चला जाता है, जब कि
कोई व्यक्ति अत्यधिक खा-पी कर मस्त हो जाता है।
22क्या तुम्हारे पास खाने पीने के लिये अपने घर नहीं
हैं। अथवा इस प्रकार तुम परमेश्वर की कलीसिया
का अनादर नहीं करते? और जो दीन है उनका तिरस्कार
करने की चेष्टा नहीं करते? मैं तुमसे क्या कहूँ? इसके
लिये क्या मैं तुम्हारी प्रशंसा करूँ। इस विषय में मैं
तुम्हारी प्रशंसा नहीं करूँगा।
23क्योंकि जो सीख मैंने तुम्हें दी है, वह मुझे प्रभु से
मिली थी। प्रभु यीशु ने उस रात, जब उसे मरवा डालने
के लिये पकड़वाया गया था, एक रोटी ली 24और
धन्यवाद देने के बाद उसने उसे तोड़ा और कहा, "यह

25 In the same way, after they ate, Jesus took the
cup of wine. He said, "This cup represents the
new agreement from God, which begins with
my blood sacrifice. When you drink this, do it to
remember me." 26 This means that every time
you eat this bread and drink this cup, you are
telling others about the Lord's death until he
comes again.

27 So if you eat the bread or drink the cup of
the Lord in a way that does not fit its meaning,
you are sinning against the body and the blood of
the Lord. 28 Before you eat the bread and drink
the cup, you should examine your own attitude.
29 If you eat and drink without paying attention
to those who are the Lord's body, your eating and
drinking will cause you to be judged guilty. 30 That
is why many in your group are sick and weak,
and many have died. 31 But if we judged
ourselves in the right way, then God would not
judge us. 32 But when the Lord judges us, he
punishes us to show us the right way. He does
this so that we will not be condemned with the
world.

33 So, my brothers and sisters, when you
come together to eat, wait for each other.
34 If some are too hungry to wait, they should
eat at home. Do this so that your meeting
together will not bring God's judgment on you. I
will tell you what to do about the other things
when I come.

Gifts From the Holy Spirit

12 Now, brothers and sisters, I want you
to understand about spiritual gifts.
2 You remember the lives you lived before
you were believers. You let yourselves be
influenced and led away to worship idols—things
that have no life. 3 So I tell you that no one
who is speaking with the help of God's Spirit
says, "Jesus be cursed." And no one can say,
"Jesus is Lord," without the help of the Holy Spirit.

4 There are different kinds of spiritual
gifts, but they are all from the same Spirit. 5 There
are different ways to serve, but we serve
the same Lord. 6 And there are different

25 उनके भोजन कर
चुकने के बाद इसी प्रकार उसने प्याला उठाया और
कहा, "यह प्याला मेरे लहू के द्वारा किया गया एक
नया वाचा है। जब कभी तुम इसे पिओ तभी मुझे याद
करने के लिये ऐसा करो।" 26 क्योंकि जितनी बार भी
तुम इस रोटी को खाते हो और इस प्याले को पीते हो,
उतनी ही बार जब तक वह आ नहीं जाता, तुम प्रभु की
मृत्यु का प्रचार करते हो।

27 अतः जो कोई भी प्रभु की रोटी या प्रभु के प्याले को
अनुचित रीति से खाता पीता है, वह प्रभु की देह और उस
के लहू के प्रति अपराधी होगा। 28 व्यक्ति को चाहिये कि
वह पहले अपने को परखे और तब इस रोटी को खाये
और इस प्याले को पिये। 29 क्योंकि प्रभु के देह का अर्थ
समझे बिना जो इस रोटी को खाता और इस प्याले को
पीता है, वह इस प्रकार खा-पी कर अपने ऊपर दण्ड को
बुलाता है। 30 इसलिए तो तुममें से बहुत से लोग दुर्बल हैं,
बीमार हैं और बहुत से तो चिरनिद्रा में सो गये हैं। 31 किन्तु
यदि हमने अपने आप को अच्छी तरह से परख लिया होता
तो हमें प्रभु का दण्ड न भोगना पड़ता। 32 प्रभु हमें अनुशासित
करने के लिये दण्ड देता है। ताकि हमें संसार के साथ
दंडित न किया जाये।

33 इसलिए हे मेरे भाईयों, जब भोजन करने तुम
इकट्ठे होते हो तो परस्पर एक दूसरे की प्रतिक्षा करो।
34 यदि सचमुच किसी को बहुत भूख लगी हो तो उसे
घर पर ही खा लेना चाहिये ताकि तुम्हारा एकत्र होना
तुम्हारे लिये दण्ड का कारण न बने। अस्तु; दूसरी बातों
को जब मैं आऊँगा, तभी सुलझाऊँगा।

पवित्र आत्मा के वरदान

12 हे भाईयों, अब मैं नहीं चाहता कि तुम
आत्मा के वरदानों के विषय में अनजान रहो।
2 तुम जानते हो कि जब तुम विधर्मी थे तब तुम्हें गूँगी
जड़ मूर्तियों की ओर जैसे भटकाया जाता था, तुम वैसे
ही भटकते थे। 3 सो मैं तुम्हें बताता हूँ कि परमेश्वर के
आत्मा की ओर से बोलने वाला कोई भी यह नहीं
कहता, "यीशु को शाप लगे" और पवित्र आत्मा के
द्वारा कहने वाले को छोड़ कर न कोई यह कह सकता
है, "यीशु प्रभु है।"

4 हर एक को आत्मा के अलग - अलग वरदान मिले
हैं। किन्तु उन्हें देने वाली आत्मा तो एक ही है। 5 सेवाएँ
अनेक प्रकार की निश्चित की गयी हैं किन्तु हम सब
जिसकी सेवा करते हैं, वह प्रभु तो एक ही है। 6 काम-
काज तो बहुत से बताये गये हैं किन्तु सभी के बीच सब
कर्मों को करने वाला वह परमेश्वर तो एक ही है।

ways that God works in people, but it is the same God who works in all of us to do everything.

7 Something from the Spirit can be seen in each person. The Spirit gives this to each one to help others. 8 The Spirit gives one person the ability to speak with wisdom. And the same Spirit gives another person the ability to speak with knowledge. 9 The same Spirit gives faith to one person and to another he gives gifts of healing. 10 The Spirit gives to one person the power to do miracles, to another the ability to prophesy, and to another the ability to judge what is from the Spirit and what is not. The Spirit gives one person the ability to speak in different kinds of languages, and to another the ability to interpret those languages. 11 One Spirit, the same Spirit, does all these things. The Spirit decides what to give each one.

The Body of Christ

12 A person has only one body, but it has many parts. Yes, there are many parts, but all those parts are still just one body. Christ is like that too. 13 Some of us are Jews and some of us are not; some of us are slaves and some of us are free. But we were all baptized to become one body through one Spirit. And we were all given the one Spirit.

14 And a person's body has more than one part. It has many parts. 15 The foot might say, "I am not a hand, so I don't belong to the body." But saying this would not stop the foot from being a part of the body. 16 The ear might say, "I am not an eye, so I don't belong to the body." But saying this would not make the ear stop being a part of the body. 17 If the whole body were an eye, it would not be able to hear. If the whole body were an ear, it would not be able to smell anything. 18-19 If each part of the body were the same part, there would be no body. But as it is, God put the parts in the body as he wanted them. He made a place for each one. 20 So there are many parts, but only one body.

21 The eye cannot say to the hand, "I don't need you!" And the head cannot say to the foot,

7हर किसी में आत्मा किसी न किसी रूप में प्रकट होता है जो हर एक की भलाई के लिये होता है। 8किसी को आत्मा के द्वारा परमेश्वर के ज्ञान से युक्त होकर बोलने की योग्यता दी गयी है तो किसी को उसी आत्मा द्वारा दिव्य ज्ञान के प्रवचन की योग्यता। 9और किसी को उसी आत्मा द्वारा विश्वास का वरदान दिया गया है तो किसी को चंगा करने की क्षमताएँ उसी आत्मा के द्वारा दी गयी हैं। 10और किसी अन्य व्यक्ति को आश्चर्यपूर्ण शक्तियाँ दी गयी हैं तो किसी दूसरे को परमेश्वर की और से बोलने का सामर्थ्य दिया गया है। और किसी को मिली है भली बुरी आत्माओं के अंतर को पहचानने की शक्ति। किसी को अलग-अलग भाषाएँ बोलने की शक्ति प्राप्त हुई है, तो किसी को भाषाओं की व्याख्या करके उनका अर्थ निकालने की शक्ति। 11किन्तु यह वही एक आत्मा है जो जिस-जिस को जैसा-जैसा ठीक समझता है, देते हुए, इन सब बातों को पूरा करता है।

मसीह की देह

12जैसे हममें से हर एक का शरीर तो एक है, पर उसमें अंग अनेक हैं। और यद्यपि अंगों के अनेक रहते हुए भी उनसे देह एक ही बनती है, वैसे ही मसीह है। 13क्योंकि चाहे हम यहूदी रहे हों, चाहे ग़ैर यहूदी, सेवक रहे हों या स्वतन्त्र। एक ही देह के विभिन्न अंग बन जाने के लिए हम सब को एक ही आत्मा द्वारा बपतिस्मा दिया गया और प्यास बुझाने को हम सब को एक ही आत्मा प्रदान की गयी।

14अब देखो, मानव शरीर किसी एक अंग से ही तो बना नहीं होता, बल्कि उसमें बहुत से अंग होते हैं। 15यदि पैर कहे, "क्योंकि मैं हाथ नहीं हूँ, इसलिए मेरा शरीर से कोई सम्बन्ध नहीं" तो इसीलिए क्या वह शरीर का अंग नहीं रहेगा। 16इसी प्रकार यदि कान कहे, "क्योंकि मैं आँख नहीं हूँ, इसलिए मैं शरीर का नहीं हूँ" तो क्या इसी कारण से वह शरीर का नहीं रहेगा। 17यदि एक आँख ही सारा शरीर होता तो सुना कहाँ से जाता? यदि कान ही सारा शरीर होता तो सूँघा कहाँ से जाता? 18किन्तु वास्तव में परमेश्वर ने जैसा ठीक समझा, हर अंग को शरीर में वैसा ही स्थान दिया। 19सो यदि शरीर के सारे अंग एक से हो जाते तो शरीर ही कहाँ होता। 20किन्तु स्थिति यह है कि अंग तो अनेक होते हैं किन्तु शरीर एक ही रहता है।

21आँख हाथ से यह नहीं कह सकती, "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं।" या ऐसे ही सिर, पैरों से नहीं कह सकता, "मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं।"

"I don't need you!" 22 No, those parts of the
body that seem to be weaker are really very
important. 23 And the parts that we think are not
worth very much are the parts we give the most
care to. And we give special care to the parts of
the body that we don't want to show. 24 The
more beautiful parts don't need this special care.
But God put the body together and gave
more honor to the parts that need it. 25 God did
this so that our body would not be divided. God
wanted the different parts to care the same for
each other. 26 If one part of the body suffers,
then all the other parts suffer with it. Or if one
part is honored, then all the other parts share its
honor.

27 All of you together are the body of
Christ. Each one of you is a part of that body.
28 And in the church God has given a place first to
apostles, second to prophets, and third to teachers.
Then God has given a place to those who do
miracles, those who have gifts of healing, those
who can help others, those who are able to lead,
and those who can speak in different kinds of
languages. 29 Not all are apostles. Not all are
prophets. Not all are teachers. Not all do miracles.
30 Not all have gifts of healing. Not all speak in
different kinds of languages. Not all interpret those
languages. 31 Continue to give your attention to
the spiritual gifts you consider to be the greatest.
But now I want to point out a way of life that is
even greater.

Let Love Be Your Guide

13 I may speak in different languages,
whether human or even of angels. But if
I don't have love, I am only a noisy bell or a
ringing cymbal. 2 I may have the gift of prophecy,
I may understand all secrets and know everything
there is to know, and I may have faith so great
that I can move mountains. But even with all
this, if I don't have love, I am nothing. 3 I may
give away everything I have to help others, and
I may even give my body as an offering to be
burned. But I gain nothing by doing all this if I
don't have love.

22इसके बिल्कुल विपरीत शरीर के जिन अंगो को
हम दुर्बल समझते हैं, वे बहुत आवश्यक होते हैं।
23और शरीर के जिन अंगो को हम कम आदरणीय
समझते हैं, उनका हम अधिक ध्यान रखते हैं। और
हमारे गुप्त अंग और अधिक शालीनता पा लेते हैं।
24जबकि हमारे प्रदर्शनीय अंगों को इस प्रकार के
उपचार की आवश्यकता नहीं होती। किन्तु परमेश्वर
ने हमारे शरीर की रचना इस ढंग से की है जिससे
उन अंगों को जो कम सुन्दर हैं और अधिक आदर
प्राप्त हो। 25ताकि देह में कहीं कोई फूट न पड़े
बल्कि देह के अंग परस्पर एक दूसरे का समान
रूप से ध्यान रखें। 26यदि शरीर का कोई एक अंग
दुख पाता है तो उसके साथ शरीर के और सभी
अंग दुखी होते हैं। यदि किसी एक अंग का मान
बढ़ता है तो सभी अंग हिस्सा बाटते हैं।

27इस प्रकार तुम सभी लोग मसीह का शरीर हो
और अलग-अलग रूप में उसके अंग हो। 28इतना ही
नहीं परमेश्वर ने कलीसिया में पहले प्रेरितों को, दूसरे
नबियों को, तीसरे उपदेशकों को, फिर आश्चर्यकर्म
करने वालों को, फिर चंगा करने की शक्ति से युक्त
व्यक्तियों को, फिर उनको जो दूसरों की सहायता करते
हैं, प्रस्थापित किया है, फिर अगुवाई करने वालों को
और फिर उन लोगों को जो विभिन्न भाषाएँ बोल सकते
हैं। 29क्या ये सभी प्रेरित हैं? ये सभी क्या नबी हैं?
क्या ये सभी उपदेशक हैं? क्या ये सभी आश्चर्यकार्य
करते हैं? 30क्या इन सब के पास चंगा करने की
शक्ति है? क्या ये सभी दूसरी भाषाएँ बोलते हैं? क्या
ये सभी अन्य भाषाओं की व्याख्या करते हैं? 31हाँ,
किन्तु तुम आत्मा के और बड़े वरदान पाने कि लिए
यत्न करते रहो। और इन सब के लिए उत्तम मार्ग तुम्हें
अब मैं दिखाऊँगा।

प्रेम महान है

13 यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएँ
तो बोल सकूँ किन्तु मुझमें प्रेम न हो, तो मैं
एक बजता हुआ घड़ियाल या झंकारती हुई झाँझ मात्र
हूँ। 2यदि मुझमें परमेश्वर की ओर से बोलने की शक्ति
हो और मैं परमेश्वर के सभी रहस्यों को जानता होऊँ
तथा समूचा दिव्य ज्ञान भी मेरे पास हो और इतना
विश्वास भी मुझमें हो कि पहाड़ों को अपने स्थान से
सरका सकूँ, किन्तु मुझमें प्रेम न हो 3तो मैं कुछ नहीं
हूँ। यदि मैं अपनी सारी सम्पत्ति थोड़ी-थोड़ी कर के
ज़रूरत मन्दों के लिए दान कर दूँ और अब चाहे अपने
शरीर तक को जला डालने के लिए सौंप दूँ किन्तु यदि
मैं प्रेम नहीं करता तो।

4 Love is patient and kind. Love is not
jealous, it does not brag, and it is not proud.
5 Love is not rude, it is not selfish, and it cannot
be made angry easily. Love does not remember
wrongs done against it. 6 Love is never happy
when others do wrong, but it is always happy
with the truth. 7 Love never gives up on people.
It never stops trusting, never loses hope, and
never quits.

8 Love will never end. But all those gifts will
come to an end—even the gift of prophecy,
the gift of speaking in different kinds of
languages, and the gift of knowledge. 9 These
will all end because this knowledge and these
prophecies we have are not complete. 10 But
when perfection comes, the things that are not
complete will end.

11 When I was a child, I talked like a child, I
thought like a child, and I made plans like a
child. When I became a man, I stopped those
childish ways. 12 It is the same with us. Now we
see God as if we are looking at a reflection in a
mirror. But then, in the future, we will see him
right before our eyes. Now I know only a part,
but at that time I will know fully, as God has
known me. 13 So these three things continue:
faith, hope, and love. And the greatest of these is
love.

Use Spiritual Gifts to Help the Church

14 Love should be the goal of your life, but
you should also want to have the gifts
that come from the Spirit. And the gift you should
want most is to be able to prophesy. 2 I will
explain why. Those who have the gift of
speaking in a different language are not speaking
to people. They are speaking to God. No one
understands them—they are speaking secret
things through the Spirit. 3 But those who
prophesy are speaking to people. They help people
grow stronger in faith, and they give
encouragement and comfort. 4 Those who speak
in a different language are helping only
themselves. But those who prophesy are helping
the whole church.

4इससे मेरा भला होने वाला नहीं हैं। प्रेम धैर्यपूर्ण
है, प्रेम दयामय है, प्रेम में ईर्ष्या नहीं होती, प्रेम अपनी
प्रशंसा आप नहीं करता। 5वह अभिमानी नहीं होता।
वह अनुचित व्यवहार कभी नहीं करता, वह स्वार्थी
नहीं है, प्रेम कभी झुँझलाता नहीं, वह बुराइयों का
कोई लेखा-जोखा नहीं रखता। 6बुराई पर कभी उसे
प्रसन्नता नहीं होती। वह तो दूसरों के साथ सत्य पर
आनंदित होता है। 7वह सदा रक्षा करता है, वह सदा
विश्वास करता है। प्रेम सदा आशा से पूर्ण रहता है।
वह सहनशील है।

8प्रेम अमर है। जबकि भविष्यवाणी का सामर्थ्य तो
समाप्त हो जायेगा, दूसरी भाषाओं को बोलने की क्षमता
युक्त जीभें एक दिन चुप हो जायेंगी, दिव्य ज्ञान का
उपहार जाता रहेगा, 9क्योंकि हमारा ज्ञान तो अधूरा है,
हमारी भविष्यवाणियाँ अपूर्ण हैं। 10किन्तु जब पूर्णता
आयेगी तो वह अधूरापन चला जायेगा।

11जब मैं बच्चा था तो एक बच्चे की तरह ही बोला
करता था, वैसे ही सोचता था और उसी प्रकार सोच
विचार करता था, किन्तु अब जब मैं बड़ा होकर पुरूष
बन गया हूँ, तो वे बचपने की बातें जाती रही हैं।
12क्योंकि अभी तो दर्पण में हमें एक धुँधला सा प्रतिबिंब
दिखायी पड़ रहा है किन्तु पूर्णता प्राप्त हो जाने पर हम
पूरी तरह आमने-सामने देखेंगे। अभी तो मेरा ज्ञान आंशिक
है किन्तु समय आने पर वह परिपूर्ण होगा। वैसे ही
जैसे परमेश्वर मुझे पूरी तरह जानता है। 13इस दौरान
विश्वास, आशा और प्रेम तो बने ही रहेंगे और इन
तीनों में भी सबसे महान् है प्रेम।

आध्यात्मिक वरदानों को कलीसिया की सेवा में लगाओ

14 प्रेम के मार्ग पर प्रयत्नशील रहो। और
आध्यात्मिक वरदानों की निष्ठा के साथ
अभिलाषा करो। विशेष रूप से परमेश्वर की ओर से
बोलने की। 2क्योंकि जिसे दूसरे की भाषा में बोलने
का वरदान मिला है, वह तो वास्तव में लोगों से नहीं
बल्कि परमेश्वर से बातें कर रहा है। क्योंकि उसे कोई
समझ नहीं पाता, वह तो आत्मा की शक्ति से रहस्यमय
वाणी बोल रहा है। 3किन्तु वह जिस परमेश्वर की
ओर से बोलने का वरदान प्राप्त है, वह लोगों से उन्हें
आत्मा में दृढ़ता, प्रोत्साहन और चैन पहुँचाने के लिए
बोल रहा है। 4जिसे विभिन्न भाषाओं में बोलने का
वरदान प्राप्त है वह तो बस अपनी आत्मा को ही सुदृढ़
करता है किन्तु जिसे परमेश्वर की ओर से बोलने का
सामर्थ्य मिला है वह समूची कलीसिया को आध्यात्मिक
रूप से सुदृढ़ बनाता है।

5 I would like all of you to have the gift of
speaking in different languages. But what I want
more is for you to prophesy. Anyone who
prophesies is more important than those who
can only speak in different languages. However,
if they can also interpret those languages, they
are as important as the one who prophesies. If
they can interpret, then the church can be helped
by what they say.
6 Brothers and sisters, will it help you if I
come to you speaking in different languages?
No, it will help you only if I bring you a new
truth or some knowledge, prophecy, or
teaching. 7 This is true even with lifeless
things that make sounds—like a flute or a harp. If
the different musical notes are not made clear,
you can't understand what song is being
played. Each note must be played clearly for you
to be able to understand the tune. 8 And in a
war, if the trumpet does not sound clearly, the
soldiers will not know it is time to prepare for
fighting.
9 It is the same with you. If you don't speak
clearly in a language people know, they cannot
understand what you are saying. You will be
talking to the air! 10 It is true that there are many
different languages in the world, and they all
have meaning. 11 But if I don't understand the
meaning of what someone is saying, it will just
be strange sounds to me, and I will sound just as
strange to them. 12 That's why you who want
spiritual gifts so much should prefer those gifts
that help the church grow stronger.
13 So those who have the gift of speaking in
a different language should pray that they can
also interpret what they say. 14 If I pray in a
different language, my spirit is praying, but
my mind does nothing. 15 So what should I do?
I will pray with my spirit, but I will also pray
with my mind. I will sing with my spirit, but I
will also sing with my mind. 16 You might be
praising God with your spirit. But someone
there without understanding cannot say "Amen"
to your prayer of thanks, because they don't
know what you are saying. 17 You may be

5अब मैं चाहता हूँ कि तुम सभी दूसरी अनेक
भाषाएँ बोलो किन्तु इससे भी अधिक मैं यह चाहता
हूँ कि तुम परमेश्वर की ओर से बोल सको क्योंकि
कलीसिया की आध्यात्मिक सुदृढ़ता के लिये अपने
कहे की व्याख्या करने वाले को छोड़ कर, दूसरी
भाषाएँ बोलने वाले से परमेश्वर की ओर से बोलने
वाला बड़ा है।
6हे भाईयों, यदि दूसरी भाषाओं में बोलते हुए मैं
तुम्हारे पास आऊँ तो इससे तुम्हारा क्या भला
होगा, जब तक कि तुम्हारे लिये मैं कोई रहस्य
उद्‌घाटन, दिव्यज्ञान, परमेश्वर का सन्देश या कोई
उपदेश न दूँ। 7यह बोलना तो ऐसे ही होगा जैसे
किसी बाँसुरी या सारंगी जैसे निर्जीव वाद्य की
ध्वनि। यदि किसी वाद्य के स्वरों में परस्पर स्पष्ट
अन्तर नहीं होता तो कोई कैसे पता लगा पायेगा
कि बाँसुरी या सारंगी पर कौन सी धुन बजायी जा
रही है। 8और यदि बिगुल से अस्पष्ट ध्वनि निकलने
लगे तो फिर युद्ध के लिये तैयार कौन होगा?
9इसी प्रकार किसी दूसरे की भाषा में जब तक कि
तुम साफ-साफ न बोलो, तब तक कोई कैसे समझ
पायेगा कि तुमने क्या कहा है। क्योंकि ऐसे में तुम तो
बस हवा में बोलने वाले ही रह जाओगे। 10इसमें कोई
सन्देह नहीं है कि संसार में भाँति-भाँति की बोलियाँ है
और उनमें से कोई भी निरर्थक नहीं है। 11सो जब तक
मैं उस भाषा का जानकार नहीं हूँ, तब तक बोलने
वाले के लिये मैं एक अजनबी ही रहूँगा। और वह
बोलने वाला मेरे लिये भी अजनबी ही ठहरेगा। 12तुम
पर भी यही बात लागू होती है क्योंकि तुम आध्यत्मिक
वरदानों को पाने के लिये उत्सुक हो। इसलिए उनमें
भरपूर होने का प्रयत्न करो, जिससे कलीसिया को
आध्यात्मिक सुदृढ़ता प्राप्त हो।
13परिणामस्वरूप जो दूसरी भाषा में बोलता है,
उसे प्रार्थना करनी चाहिये कि वह अपने कहे का
अर्थ भी बता सके। 14क्योंकि यदि मैं किसी अन्य
भाषा में प्रार्थना करूँ तो मेरी आत्मा तो प्रार्थना
कर रही होती है किन्तु मेरी बुद्धि व्यर्थ रहती है।
15तो फिर क्या करना चाहिये? मैं अपनी आत्मा
से तो प्रार्थना करूँगा ही किन्तु साथ ही अपनी
बुद्धि से भी प्रार्थना करूँगा। अपनी आत्मा से तो
उसकी स्तुति करूँगा ही किन्तु अपनी बुद्धि से भी
उसकी स्तुति करूँगा। 16क्योंकि यदि तू केवल
अपनी आत्मा से ही कोई आशीर्वाद दे तो वहाँ बैठा
कोई व्यक्ति जो बस सुन रहा है, तेरे धन्यवाद पर
"आमीन" कैसे कहेगा क्योंकि तू जो कह रहा है,
उसे वह जानता ही नहीं। 17अब देख तू तो चाहे

thanking God in a good way, but others are not helped.

18 I thank God that my gift of speaking in different kinds of languages is greater than any of yours. 19 But in the church meetings I would rather speak five words that I understand than thousands of words in a different language. I would rather speak with my understanding, so that I can teach others.

20 Brothers and sisters, don't think like children. In evil things be like babies, but in your thinking you should be like full-grown adults. 21 As the Scriptures say,

"Using those who speak a different language
and using the lips of foreigners,
I will speak to these people.
But even then, they will not obey me."
Isaiah 28:11-12

This is what the Lord says.

22 And from this we see that the use of different languages shows how God deals with those who don't believe, not with those who believe. And prophecy shows how God works through those who believe, not through unbelievers. 23 Suppose the whole church meets together and you all speak in different languages. If some people come in who are without understanding or don't believe, they will say you are crazy. 24 But suppose you are all prophesying and someone comes in who does not believe or who is without understanding. Their sin will be shown to them, and they will be judged by everything you say. 25 The secret things in their heart will be made known. So they will bow down and worship God. They will say, "Without a doubt, God is here with you."

Your Meetings Should Be Helpful to All

26 So, brothers and sisters, what should you do? When you meet together, one person has a song, another has a teaching, and another has a new truth from God. One person speaks in a different language, and another interprets that

भली-भाँति धन्यवाद दे रहा है किन्तु दूसरे व्यक्ति की तो उससे कोई आध्यात्मिक सुदृढ़ता नहीं होती।

18मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि मैं तुम सब से बढ़कर विभिन्न भाषाएँ बोल सकता हूँ। 19किन्तु कलीसिया सभा के बीच किसी दूसरी भाषा में दसियों हज़ार शब्द बोलने की उपेक्षा अपनी बुद्धि का उपयोग करते हुए बस पाँच शब्द बोलना अच्छा समझता हूँ ताकि दूसरों को भी शिक्षा दे सकूँ।

20हे भाईयों, अपने विचारों में बचकाने मत रहो बल्कि बुराइयों के विषय में अबोध बच्चे जैसे बने रहो। किन्तु अपने चिन्तन में सयाने बनो। 21शास्त्र कहता है:

"उनका उपयोग करते हुए
जो अन्य बोली बोलते हैं,
उनके मुखों का उपयोग करते हुए जो पराए हैं।
मैं इनसे बात करूँगा, पर तब भी
ये मेरी न सुनेंगे।"
यशायाह 28:11-12

प्रभु ऐसा ही कहता है।

22सो दूसरी भाषाएँ बोलने का वरदान अविश्वासियों के लिए संकेत है न कि विश्वासियों के लिये। जबकि परमेश्वर की ओर से बोलना अविश्वासियों के लिये नहीं, बल्कि विश्वासियों के लिये है। 23सो यदि समूचा कलीसिया एकत्र हो और हर कोई दूसरी-दूसरी भाषाओं में बोल रहा हो तभी बाहर के लोग या अविश्वासी भीतर आ जायें तो क्या वे तुम्हें पागल नहीं कहेंगे। 24किन्तु यदि हर कोई परमेश्वर की ओर से बोल रहा हो और तब तक कुछ अविश्वासी या बाहर के आ जाएँ तो क्या सब लोग उसे उसके पापों का बोध नहीं करा देंगे। सब लोग जो कह रहे हैं, उसी पर उसका न्याय होगा। 25जब उसके मन के भीतर छिपे भेद खुल जायेंगे तब तक वह यह कहते हुए "सचमुच तुम्हारे बीच परमेश्वर है" दण्डवत प्रणाम करके परमेश्वर की उपासना करेगा।

तुम्हारी सभाएँ और कलीसिया

26हे भाईयों, तो फिर क्या करना चाहिये? तुम जब इकट्ठे होते होतो तुममें से कोई भजन, कोई उपदेश और कोई आध्यात्मिक रहस्य का उद्‌घाटन करता है। कोई किसी अन्य भाषा में बोलता है तो कोई उसकी व्याख्या करता है। ये सब बाते

language. The purpose of whatever you do should be to help everyone grow stronger in faith. 27 When you meet together, if anyone speaks to the group in a different language, it should be only two or no more than three people who do this. And they should speak one after the other. And someone else should interpret what they say. 28 But if there is no interpreter, then anyone who speaks in a different language should be quiet in the church meeting. They should speak only to themselves and to God.

29 And only two or three prophets should speak. The others should judge what they say. 30 And if a message from God comes to someone who is sitting, the first speaker should be quiet. 31 You can all prophesy one after the other. This way everyone can be taught and encouraged. 32 The spirits of prophets are under the control of the prophets themselves. 33 God is not a God of confusion but a God of peace. This is the rule for all the meetings of God's people.

34 The women should keep quiet in these church meetings. They are not allowed to speak out but should be under authority, as the Law of Moses says. 35 If there is something they want to know, they should ask their own husbands at home. It is shameful for a woman to speak up like that in the church meeting. 36 God's teaching did not come from you, and you are not the only ones who have received it. 37 If you think you are a prophet or that you have a spiritual gift, you should understand that what I am writing to you is the Lord's command. 38 If you do not accept this, you will not be accepted.

39 So my brothers and sisters, continue to give your attention to prophesying. And don't stop anyone from using the gift of speaking in different languages. 40 But everything should be done in a way that is right and orderly.

The Good News About Jesus Christ

15 Now, brothers and sisters, I want you to remember the Good News I told you. You received that Good News message, and you continue to base your life on it. 2 That

कलीसिया की आत्मिक सुदृढ़ता के लिये की जानी चाहिये। 27यदि किसी अन्य भाषा में बोलना है तो अधिक से अधिक दो या तीन को ही बोलना चाहिये-बारी-बारी, एक-एक करके। और जो कुछ कहा गया है, एक को उसकी व्याख्या करनी चाहिये। 28यदि वहाँ व्याख्या करने वाला कोई न हो तो बोलने वाले को चाहिये कि वह सभा में चुप ही रहे और फिर उसे अपने आप से और परमेश्वर से ही बातें करनी चाहिये।

29परमेश्वर की ओर से उसके दूत के रूप में बोलने का जिन्हें वरदान मिला है, ऐसे दो या तीन व्यक्तियों को ही बोलना चाहिये और दूसरों को चाहिये कि जो कुछ उन्होंने कहा है, वे उसे परखते रहें। 30यदि वहाँ किसी बैठे हुए पर किसी बात का रहस्य उद्‌घाटन होता है तो परमेश्वर की ओर से बोल रहे पहले वक्ता को चुप हो जाना चाहिये। 31क्योंकि तुम एक-एक करके परमेश्वर की ओर से बोल सकते हो ताकि सभी लोग सीखें और प्रोत्साहित हों। 32नबियों की आत्माएँ नबियों के वश में रहती हैं। 33क्योंकि परमेश्वर अव्यवस्था नहीं, शांति देता है। जैसा कि सन्तों की सभी कलीसियों में होता है।

34स्त्रियों को चाहिये कि वे सभाओं में चुप रहें क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है। बल्कि जैसा कि व्यवस्था के विधान में भी कहा गया है, उन्हेम दब कर रहना चाहिये। 25यदि वे कुछ जानना चाहती हैं तो उन्हें घर पर अपने-अपने पति से पूछना चाहिये क्योंकि एक स्त्री के लिये यह शोभा नहीं देता कि वह सभा में बोले। 36क्या परमेश्वर का वचन तुमसे उत्पन्न हुआ? या वह मात्र तुम तक पहुँचा? निश्चित ही नहीं। 37यदि कोई सोचता है कि वह नबी है अथवा उसे आध्यात्मिक वरदान प्राप्त है तो उसे पहचान लेना चाहिये कि मैं तुम्हें जो कुछ लिख रहा हूँ, वह प्रभु का आदेश है। 38सो यदि कोई इसे नहीं पहचान पाता तो उसे भी नहीं पहचाना जायेगा।

39इसलिए हे मेरे भाईयों, परमेश्वर की ओर से बोलने को तत्पर रहो तथा दूसरी भाषाओं में बोलने वालों को भी मत रोको। 40किन्तु ये सभी बातें सही ढ़ंग से और व्यवस्थानुसार की जानी चाहियें।

यीशु का सुसमाचार

15 हे भाईयों, अब मैं तुम्हें उस सुसमाचार की याद दिलाना चाहता हूँ जिसे मैंने तुम्हें सुनाया था और तुमने भी जिसे ग्रहण किया था और जिसमें तुम निरन्तर स्थिर बने हुए हो। 2और

Good News, the message you heard from me, is God's way to save you. But you must continue believing it. If you don't, you believed for nothing.

3 I gave you the message that I received. I told you the most important truths: that Christ died for our sins, as the Scriptures say; 4 that he was buried and was raised to life on the third day, as the Scriptures say; 5 and that he appeared to Peter and then to the twelve apostles. 6 After that, Christ appeared to more than 500 other believers at the same time. Most of them are still living today, but some have died. 7 Then he appeared to James and later to all the apostles. 8 Last of all, he appeared to me. I was different, like a baby born before the normal time.

9 All the other apostles are greater than I am. I say this because I persecuted the church of God. That is why I am not even good enough to be called an apostle. 10 But, because of God's grace, that is what I am. And his grace that he gave me was not wasted. I worked harder than all the other apostles. (But I was not really the one working. It was God's grace that was with me.) 11 So then it is not important if I told you God's message or if it was the other apostles who told you—we all tell people the same message, and this is what you believed.

We Will Be Raised From Death

12 We tell everyone that Christ was raised from death. So why do some of you say that people will not be raised from death? 13 If no one will ever be raised from death, then Christ has never been raised. 14 And if Christ has never been raised, then the message we tell is worth nothing. And your faith is worth nothing. 15 And we will also be guilty of lying about God, because we have told people about him, saying that he raised Christ from death. And if no one is raised from death, then God never raised Christ from death. 16 If those who have died are not raised, then Christ has not been raised either.

जिसके द्वारा तुम्हारा उद्धार भी हो रहा है बशर्ते तुम उन शब्दों को जिनका मैंने तुम्हें आदेश दिया था, अपने में दृढ़ता से थामे रखो। (नहीं तो तुम्हारा विश्वास धारण करना ही बेकार गया।)

3जो सर्वप्रथम बात मुझे प्राप्त हुई थी, उसे मैंने तुम तक पहुँचा दिया कि शास्त्रों के अनुसार: मसीह हमारे पापों के लिये मरा 4और उसे दफना दिया गया। और शास्त्र कहता है कि फिर तीसरे दिन उसे जिला कर उठा दिया गया। 5और फिर वह पतरस के सामने प्रकट हुआ और उसके बाद बारहों प्रेरितों को उसने दर्शन दिये। 6फिर वह पाँच सौ से भी अधिक भाईयों को एक साथ दिखाई दिया। उनमें से बहुतेरे आज तक जीवित हैं। यद्यपि कुछ की मृत्यु भी हो चुकी है। 7इसके बाद वह याकूब के सामने प्रकट हुआ। और तब उसने सभी प्रेरितों को फिर दर्शन दिये। 8और सब से अंत में उसने मुझे भी दर्शन दिये। मैं तो समय से पूर्व असामान्य जन्मे सतमासे बच्चे जैसा हूँ।

9क्योंकि मैं तो प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ। यहाँ तक कि मैं तो प्रेरित कहलाने योग्य भी नहीं हू क्योंकि मैं तो परमेश्वर की कलीसिया को सताया करता था। 10किन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से मैं वैसा बना हूँ जैसा आज हूँ। मुझ पर उसका अनुग्रह बेकार नहीं गया। मैंने तो उन सब से बढ़ चढ़कर परिश्रम किया है, यद्यपि वह परिश्रम करने वाला मैं नहीं था, बल्कि परमेश्वर का वह अनुग्रह था जो मेरे साथ रहता था। 11सो चाहे तुम्हें मैंने उपदेश दिया हो चाहे उन्होंने, हम सब यही उपदेश देते हैं और इसी पर तुमने विश्वास किया है।

हमारा पुनर्जीवन

12किन्तु जब कि मसीह को मरे हुओं में से पुनरुत्थापित किया गया तो तुममें से कुछ ऐसा क्यों कहते हो कि मृत्यु के बाद फिर से जी उठना सम्भव नहीं है। 13और यदि मृत्यु के बाद जी उठना है ही नहीं तो फिर मसीह भी मृत्यु के बाद नहीं जिलाया गया। 14और यदि मसीह को नहीं जिलाया गया तो हमारा उपदेश देना बेकार है और तुम्हारा विश्वास भी बेकार है। 15और हम भी फिर तो परमेश्वर के बारे में झूठे गवाह ठहरते हैं क्योंकि हमने परमेश्वर के सामने कसम उठा कर यह साक्षी दी है कि उसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया। किन्तु उनके कथन के अनुसार यदि मरे हुए जिलाये नहीं जाते तो फिर परमेश्वर ने मसीह को भी नहीं जिलाया। 16क्योंकि यदि मरे हुए नहीं जिलाये जाते हैं तो मसीह को भी नहीं जिलाया गया।

17 And if Christ has not been raised from death,
then your faith is for nothing; you are still guilty
of your sins. 18 And those in Christ who have
already died are lost. 19 If our hope in Christ is
only for this life here on earth, then people
should feel more sorry for us than for anyone
else.

20 But Christ really has been raised from
death—the first one of all those who will be
raised. 21 Death comes to people because of
what one man did. But now there is resurrection
from death because of another man. 22 I mean
that in Adam all of us die. And in the same
way, in Christ all of us will be made alive again.
23 But everyone will be raised to life in the right
order. Christ was first to be raised. Then, when
Christ comes again, those who belong to him
will be raised to life. 24 Then the end will come.
Christ will destroy all rulers, authorities, and
powers. Then he will give the kingdom to God
the Father.

25 Christ must rule until God puts all enemies
under his control. 26 The last enemy to be
destroyed will be death. 27 As the Scriptures say,
"God put everything under his control."* When
it says that "everything" is put under him, it is
clear that this does not include God himself. God
is the one putting everything under Christ's
control. 28 After everything has been put under
Christ, then the Son himself will be put under
God. God is the one who put everything
under Christ. And Christ will be put under God
so that God will be the complete ruler over
everything.

29 If no one will ever be raised from death,
then what will the people do who are baptized
for those who have died? If the dead are
never raised, then why are people baptized for
them?

30 And what about us? Why do we put
ourselves in danger every hour? 31 I face
death every day. That is true, brothers and
sisters, just as it is true that I am proud of

15:27 Quote from Ps. 8:6.

17और यदि मसीह को फिर से जीवित नहीं किया गया
है, फिर तो तुम्हारा विश्वास ही निरर्थक है और तुम
अभी भी अपने पापों में फँसे हो। 18हाँ, फिर तो जिन्होंने
मसीह के लिए अपने प्राण दे दिये, वे यूँ ही नष्ट हुए।
19यदि हमने केवल अपने इस भौतिक जीवन के लिये
ही यीशु मसीह में अपनी आशा रखी है तब तो हम
और सभी लोगों से अधिक अभागे हैं।

20किन्तु अब वास्तविकता यह है कि मसीह को
मरे हुओं में से जिलाया गया है। वह मरे हुओं की
फ़सह का पहला फल है। 21क्योंकि जब एक मनुष्य
के द्वारा मृत्यु आयी तो एक मनुष्य के द्वारा ही मृत्यु से
पुनर्जीवित हो उठना भी आया। 22क्योंकि ठीक वैसे
ही जैसे आदम के कर्मों के कारण हर किसी के लिए
मृत्यु आयी, वैसे ही मसीह के द्वारा सब को फिर से
जिला उठाया जायेगा 23किन्तु हर एक को उसके अपने
कर्म के अनुसार सबसे पहले मसीह को, जो फसल
का पहला फल है और फिर उसने पुनः आगमन पर
उनको, जो मसीह के हैं। 24इसके बाद जब मसीह
सभी शासकों, अधिकारियों, हर प्रकार की शक्तियों
का अंत करके राज्य को परम पिता परमेश्वर के हाथों
सौंप देगा, तब प्रलय हो जायेगी।

25किन्तु जब तक परमेश्वर मसीह के शत्रुओं
को उसके पैरों तले न कर दे तब तक उसका राज्य
करते रहना आवश्यक है। 26सबसे अंतिम शत्रु के
रूप में मृत्यु का नाश किया जायेगा। 27क्योंकि
"परमेश्वर ने हर किसी को मसीह के चरणों के
अधीन रखा है।"* अब देखो जब शास्त्र कहता है,
"सब कुछ" को उसके अधीन कर दिया गया है।
तो जिसने "सब कुछ" को उसके चरणों के अधीन
किया है, वह स्वयं इससे अलग रहा है। 28और
जब सब कुछ मसीह के अधीन कर दिया गया है,
तो यहाँ तक कि स्वयं पुत्र को भी उस परमेश्वर के
अधीन कर दिया जायेगा जिसने सब कुछ को
मसीह के अधीन कर दिया ताकि हर किसी पर पूरी
तरह परमेश्वर का शासन हो।

29नहीं तो जिन्होंने अपने प्राण दे दिये हैं, उनके
कारण जिन्होंने बपतिस्मा लिया है, वे क्या करेंगे। यदि
मरे हुए कभी पुनर्जीवित होते ही नहीं तो लोगों को
उनके लिये बपतिस्मा दिया ही क्यों जाता है?

30और हम भी हर घड़ी संकट क्यों झेलते रहते
है? 31भाईयों। तुम्हारे लिए मेरा वह गर्व जिसे मैं
हमारे प्रभु यीशु मसीह में स्थित होने के नाते रखता
हूँ, उसे साक्षी करके शपथ पूर्वक कहता हूँ कि मैं

15:27 देखें भजन. 8:6

what you are because of Christ Jesus our Lord.
32 I fought wild animals in Ephesus. If I did
that only for human reasons, then I have
gained nothing. If we are not raised from
death, "Let us eat and drink, because tomorrow
we die."*
33 Don't be fooled: "Bad friends will ruin good
habits." 34 Come back to your right way of
thinking and stop sinning. Some of you don't
know God. I say this to shame you.

What Kind of Body Will We Have?

35 But someone may ask, "How are the
dead raised? What kind of body will they
have?" 36 These are stupid questions. When
you plant something, it must die in the ground
before it can live and grow. 37 And when you
plant something, what you plant does not have
the same "body" that it will have later. What you
plant is only a seed, maybe wheat or something
else. 38 But God gives it the body that he has
planned for it, and he gives each kind of seed its
own body. 39 All things made of flesh are not the
same: People have one kind of flesh, animals have
another, birds have another, and fish have yet
another kind. 40 Also there are heavenly bodies
and earthly bodies. But the beauty of the heavenly
bodies is one kind, and the beauty of the earthly
bodies is another. 41 The sun has one kind of
beauty, the moon has another kind, and the stars
have another. And each star is different in its
beauty.
42 It will be the same when those who have
died are raised to life. The body that is "planted"
in the grave will ruin and decay, but it will be
raised to a life that cannot be destroyed. 43 When
the body is "planted," it is without honor. But
when it is raised, it will be great and glorious.
When the body is "planted," it is weak. But when
it is raised, it will be full of power. 44 The body
that is "planted" is a physical body. When it is
raised, it will be a spiritual body.

15:32 Quote from Isa. 22:13; 56:12.

हर दिन मरता हूँ। 32यदि मैं इफ्रिसुस में जगली
पशुओं के साथ मानवीय स्तर पर ही लड़ा था तो
उससे मुझे क्या मिला। यदि मरे हुए जिलाये नहीं
जाते, "तो आओ, खायें, पीएँ (मौज मनायें) क्योंकि
कल तो मर ही जाना है।"*
33भटकना बंद करो: "बुरी संगति से अच्छी
आदतें नष्ट हो जाती हैं।" 34होश में आओ, अच्छा
जीवन अपनाओ, जैसा कि तुम्हें होना चाहिये। पाप
करना बंद करो। क्योंकि तुममें से कुछ तो ऐसे हैं
जो परमेश्वर के बारे में कुछ भी नहीं जानते। मैं
यह इसलिए कह रहा हूँ कि तुम्हें लज्जा आए।

हमें कैसी देह मिलेगी?

35किन्तु कोई पूछ सकता है, "मरे हुए कैसे
जिलाये जाते हैं? और वे फिर कैसी देह धारण
करके आते हैं?" 36तुम कितने मूर्ख हो। तुम जो
बोते हो वह जब तक पहले मर नहीं जाता, जीवित
नहीं होता। 37और जहाँ तक जो तुम बोते हो,
उसका प्रश्न है, तो जो पौधा विकसित होना है, तुम
उस भरेपूरे पौधे को तो धरती में नहीं बोते। बस
केवल बीज बोते हो, चाहे वह गेहूँ का दाना हो
और चाहे कुछ और। 38फिर परमेश्वर जैसा चाहता
है, वैसा रूप उसे देता है। हर बीज को वह उसका
अपना शरीर प्रदान करता है। 39सभी जीवित प्राणियों
के शरीर एक जैसे नहीं होते। मनुष्यों का शरीर
एक तरह का होता है जबकि पशुओं का शरीर
दूसरी तरह का। चिड़ियाओं की देह अलग प्रकार
की होती है और मछलियों की अलग। 40कुछ देह
दिव्य होती हैं और कुछ पार्थिव किन्तु दिव्य देह की
आभा एक प्रकार की होती है और पार्थिव शरीरों
की दूसरे प्रकार की। 41सूरज का तेज एक प्रकार
का होता है और चाँद का दूसरे प्रकार का। तारों में
भी एक भिन्न प्रकार का प्रकाश रहता है। और हाँ,
तारों का प्रकाश भी एक दूसरे से भिन्न रहता है।
42सो जब मरे हुए जी उठेंगे तब भी ऐसा ही
होगा। वह देह जिसे धरती में दफना कर "बोया"
गया है, नाशमान है किन्तु वह देह जिसका पुनरुत्थान
हुआ है, अविनाशी है। 43वह काया जो धरती में
"दफनाई" गयी है, अनादरपूर्ण है किन्तु वह काया
जिसका पुनरुत्थान हुआ है, महिमा से मंडित है।
वह काया जिसे धरती में "गाड़ा" गया है, दुर्बल है
किन्तु वह काया जिसे पुनर्जीवित किया गया है,
शक्तिशाली है। 44जिस काया को धरती में

15:32 देखें यशा. 22:13; 56:12

There is a physical body. So there is also a spiritual body. 45 As the Scriptures say, "The first man, Adam, became a living person."* But the last Adam is a life-giving spirit. 46 The spiritual man did not come first. It was the physical man that came first; then came the spiritual. 47 The first man came from the dust of the earth. The second man came from heaven. 48 All people belong to the earth. They are like that first man of earth. But those who belong to heaven are like that man of heaven. 49 We were made like that man of earth, so we will also be made like that man of heaven.

50 I tell you this, brothers and sisters: Our bodies of flesh and blood cannot have a part in God's kingdom. Something that will ruin cannot have a part in something that never ruins. 51 But listen, I tell you this secret: We will not all die, but we will all be changed. 52 It will only take the time of a second. We will be changed as quickly as an eye blinks. This will happen when the last trumpet blows. The trumpet will blow and those who have died will be raised to live forever. And we will all be changed. 53 This body that ruins must clothe itself with something that will never ruin. And this body that dies must clothe itself with something that will never die. 54 So this body that ruins will clothe itself with that which never ruins. And this body that dies will clothe itself with that which never dies. When this happens, the Scriptures will be made true:

"Death is swallowed in victory."
Isaiah 25:8

55 "O death, where is your victory?
Where is your power to hurt?"
Hosea 13:14

56 Death's power to hurt is sin, and the power of sin is the law. 57 But we thank God who gives us the victory through our Lord Jesus Christ!

"दफनाया" गया है, वह प्राकृतिक है किन्तु जिसे पुनर्जीवित किया गया है, वह आध्यात्मिक शरीर है।

यदि प्राकृतिक शरीर होते हैं तो आध्यात्मिक शरीरों का भी अस्तित्व है। 45शास्त्र कहता है: "पहला मनुष्य (आदम) एक सजीव प्राणी बना।"* किन्तु अंतिम आदम (मसीह) जीवनदाता आत्मा बना। 46आध्यात्मिक पहले नहीं आता, बल्कि पहले आता है भौतिक और फिर उसके बाद ही आता है आध्यात्मिक। 47पहले मनुष्य को धरती की मिट्टी से बनाया गया और दूसरा मनुष्य (मसीह) स्वर्ग से आया। 48जैसे उस मनुष्य की रचना मिट्टी से हुई, वैसे ही सभी लोग मिट्टी से ही बने। और उस दिव्य पुरुष के समान अन्य दिव्य पुरुष भी स्वर्गीय हैं। 49सो जैसे हम उस मिट्टी से बने का रूप धारण करते हैं, वैसे ही उस स्वर्गिक का रूप भी हम धारण करेंगे।

50हे भाईयों, मैं तुम्हें यह बता रहा हूँ: मांस और लहू (हमारे ये पार्थिव शरीर) परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकार नहीं पा सकते। और न ही जो विनाशमान है, वह अविनाशी का उत्तराधिकारी हो सकता है। 51सुनो, मैं तुम्हें एक रहस्यपूर्ण सत्य बताता हूँ: हम सभी मरेंगे नहीं, बल्कि हम सब बदल दिये जायेंगे। 52जब अंतिम तुरही बजेगी तब पलक झपकते एक क्षण में ही ऐसा हो जायेगा क्योंकि तुरही बजेगी और मरे हुए अमर हो कर जी उठेंगे और हम जो अभी जीवित हैं, बदल दिये जायेंगे। 53क्योंकि इस नाशवान देह का अविनाशी चोले को धारण करना आवश्यक है और इस मरणशील काया का अमर चोला धारण कर लेना अनिवार्य है। 54सो जब यह नाशमान देह अविनाशी चोले को धारण कर लेगी और वह मरणशील काया अमर चोले को ग्रहण कर लेगी तो शास्त्र का लिखा यह पूरा हो जायेगा:

"विजय ने मृत्यु को निगल लिया।"
यशायाह 25:8

55 "हे मृत्यु, तेरी विजय कहाँ है?
हे मृत्यु, तेरा दंश कहाँ है?"
होशे 13:14

56पाप मृत्यु का दंश है और पाप को शक्ति मिलती है व्यवस्था से। 57किन्तु परमेश्वर का धन्यवाद है जो प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें विजय दिलाता है।

15:45 Quote from Gen. 2:7.

15:45 देखें उत्पत्ति 2:7

58 So, my dear brothers and sisters, stand
strong. Don't let anything change you. Always
give yourselves fully to the work of the Lord.
You know that your work in the Lord is never
wasted.

The Collection for Believers in Judea

16 Now, about the collection of money for
God's people: Do the same as I told the
Galatian churches to do. 2 On the first day of
every week, each of you should take some of
your money and put it in a special place. Save up
as much as you can from what you are blessed
with. Then you will not have to gather it all after
I come. 3 When I arrive, I will send some men to
take your gift to Jerusalem. These will be the
ones you all agree should go. I will send them
with letters of introduction. 4 If it seems good
for me to go too, we can all travel together.

Paul's Plans

5 I plan to go through Macedonia, so I will
come to you after that. 6 Maybe I will stay
with you for a time. I might even stay all winter.
Then you can help me on my trip, wherever I
go. 7 I don't want to come see you now,
because I would have to leave to go to other
places. I hope to stay a longer time with you, if
the Lord allows it. 8 But I will stay in Ephesus
until Pentecost.

9 I will stay here, because a good opportunity
for a great and growing work has been given to
me now. And there are many people working
against it.

10 Timothy might come to you. Try to make
him feel comfortable with you. He is working
for the Lord the same as I am. 11 So none of you
should refuse to accept Timothy. Help him
continue on his trip in peace so that he can come
back to me. I am expecting him to come back
with the other brothers.

12 Now about our brother Apollos: I strongly
encouraged him to visit you with the other
brothers. He prefers not to come now, but he
will come when he has the opportunity.

58सो मेरे प्यारे भाईयों, अटल बने डटे रहो। प्रभु
के कार्य के प्रति अपने आपको सदा पूरी तरह
समर्पित कर दो। क्योंकि तुम तो जानते ही हो कि
प्रभु में किया गया तुम्हारा कार्य व्यर्थ नहीं है।

दूसरे विश्वासियों के लिये भेंट

16 अब देखो, संतों के लिये दान इकट्ठा
करने के बारे में मैंने गलातिया की
कलीसियाओं को जो आदेश दिया है तुम भी वैसे
ही करो। 2हर रविवार को अपनी आय में से कुछ
न कुछ अपने घर पर ही इकट्ठा करते रहो। ताकि
जब मैं आऊँ, उस समय दान इकट्ठा न करना
पड़े। 3मेरे वहाँ पहुँचने पर जिस किसी व्यक्ति को
तुम चाहोगे, मैं उसे परिचय पत्र देकर तुम्हारा
उपहार यरुशलेम ले जाने के लिए भेज दूँगा। 4और
यदि मेरा जाना भी उचित हुआ तो वे मेरे साथ ही
चले जायेंगे।

पौलुस की योजनाएँ

5मैं जब मकिदुनिया होकर जाऊँगा तो तुम्हारे पास
भी आऊँगा क्योंकि मकिदुनिया से होते हुए जाने का
कार्यक्रम मैं निश्चित कर चुका हूँ। 6हो सकता है मैं
कुछ समय तुम्हारे साथ ठहरूँ या सर्दियाँ ही तुम्हारे
साथ बिताऊँ ताकि जहाँ कहीं मुझे जाना हो, तुम मुझे
विदा कर सको। 7मैं यह तो नहीं चाहता कि वहाँ से
जाते जाते ही बस तुमसे मिल लूँ बल्कि मुझे तो आशा
है कि मैं यदि प्रभु ने चाहा तो कुछ समय तुम्हारे साथ
रहूँगा भी। 8मैं पिन्तेकुस्त के उत्सव तक इफिसुस में ही
ठहरूँगा।

9क्योंकि ठोस काम करने की सम्भावनाओं का वहाँ
बड़ा द्वार खुला है और फिर वहाँ मेरे विरोधी भी तो
बहुत से हैं।

10यदि तिमुथियुस आ पहुँचे तो ध्यान रखना उसे
तुम्हारे साथ कष्ट न हो क्योंकि मेरे समान ही वह
भी प्रभु का काम कर रहा है। 11इसलिए कोई भी
उसे छोटा न समझे। उसे उसकी यात्रा पर शान्ति
के साथ विदा करना ताकि वह मेरे पास आ पहुँचे।
मैं दूसरे भाइयों के साथ उसके आने की प्रतीक्षा
कर रहा हुँ।

12अब हमारे भाई अपुल्लौस की बात यह है
कि मैंने उसे दूसरे भाईयों के साथ तुम्हारे पास जाने
को अत्यधिक प्रोत्साहित किया है। किन्तु परमेश्वर
की यह इच्छा बिल्कुल नहीं थी कि वह अभी
तुम्हारे पास आता। सो अवसर पाते ही वह आ
जायेगा।

Paul Ends His Letter

13 Be careful. Hold firmly to your faith.
Have courage and be strong. 14 Do everything in
love.

15 You know that Stephanas and his family
were the first believers in Achaia. They have
given themselves to the service of God's people.
I ask you, brothers and sisters, 16 to follow the
leading of people like these and others who work
hard and serve together with them.

17 I am happy that Stephanas, Fortunatus, and
Achaicus have come. You are not here, but they
have filled your place. 18 They have been a great
encouragement to me and to you as well. You
should recognize the value of such people.

19 The churches in Asia send you their
greetings. Aquila and Priscilla greet you in the
Lord. Also the church that meets in their house
sends greetings. 20 All the brothers and sisters
here send their greetings. Give each other the
special greeting of God's people.

21 Here's my greeting in my own
handwriting—Paul.

22 If anyone does not love the Lord, let that
person be separated from God—lost forever!

Come, O Lord!*

23 The grace of the Lord Jesus be with you.

24 My love be with all of you in Christ
Jesus.

पौलुस के पत्र की समाप्ति

13सावधान रहो। दृढ़ता के साथ अपने विश्वास
में अटल बने रहो। साहसी बनो, शक्तिशाली बनो।
14तुम जो कुछ करो, प्रेम से करो।

15तुम लोग स्तिफनुस के घराने को तो जानते ही हो
कि वे अरवाया की फसल के पहले फल हैं। उन्होंने
परमेश्वर के पुरुषों की सेवा का बीड़ा उठाया है।
इसलिए भाईयों तुम से मेरा निवेदन है कि 16तुम लोग
भी अपने आप को ऐसे लोगों की और हर उस व्यक्ति
की अगुवाई में सौंप दो जो इस काम से जुड़ता है और
प्रभु के लिये परिश्रम करता है।

17स्तिफ़नुस, फुरतुनातुस और अखइकुस की
उपस्थिति से मैं प्रसन्न हूँ। क्योंकि मेरे लिए जो तुम
नहीं कर सके, वह उन्होंने कर दिखाया। 18उन्होंने
मेरी तथा तुम्हारी आत्मा को आनन्दित किया है।
इसलिए ऐसे लोगों का सम्मान करो।

19एशिया प्रान्त की कलीसियाओं की ओर से
तुम्हें प्रभु में नमस्कार। अक्विला और प्रिस्किल्ला।
उनके घर पर एकत्र होने वाली कलीसिया की ओर
से तुम्हें हार्दिक नमस्कार। 20सभी बंधुओं की ओर
से तुम्हें नमस्कार। पवित्र चुम्बन के साथ तुम
आपस में एक दूसरे का सत्कार करो।

21मैं, पौलुस, तुम्हें अपने हाथों से नमस्कार
लिख रहा हूँ।

22यदि कोई प्रभु में प्रेम नहीं रखे तो उसे अभिशाप
मिले।

हमारे प्रभु आओ!*

23प्रभु यीशु का अनुग्रह तुम्हें प्राप्त हो।

24यीशु मसीह में तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम सबके
साथ रहे।

16:22 ***Come, O Lord*** This is a translation of the Aramaic "*maranatha.*"

16:22 हमारे प्रभु आओ अरामिक भाषा में "मारानाथा।"